RNI NO.GUJHIN/2007/20220 REGD.NO.GUJ.581

श्री स्वामिनारायण

मासिक

अंक नं.३४
फरवरी २०
रु/-५

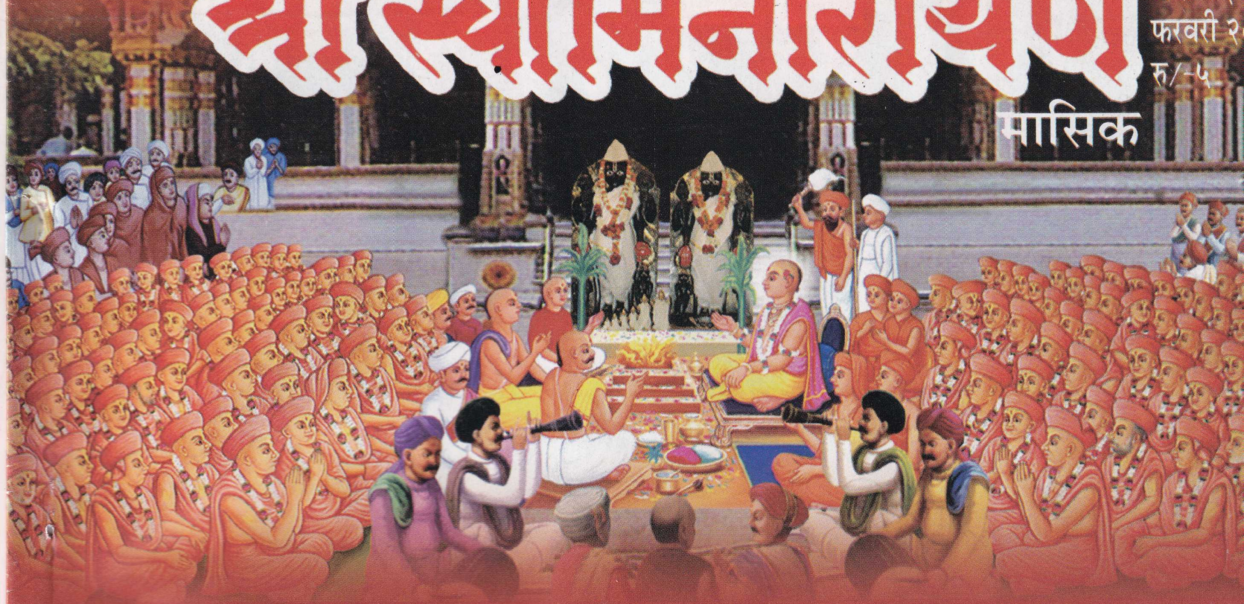

विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेवकी प्रतिष्ठा फाल्गुन शुक्ल-३ को हुई थी

shree swaminarayan museum

Museum Year
March 2010 - March 2011

ई. २०१०-११ का वर्ष "म्युझियम वर्ष"

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से मार्च २०१० से मार्च २०११ का वर्ष "म्युझियम इयर" के रुप में मनाया जायेगा। सभी हरि भक्तों को २०१०-११ का आर्थिक सहयोग "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" के निर्माणार्थ उदार हृदय से प.पू. बड़े महाराजश्री के गुरु ऋण से मुक्त होने के लिये उन्हीं के चरण में अर्पण करने का निवेदन है।

"श्री स्वामिनारायण म्युझियम"

उद्घाटन ८ मार्च २०११

संम्वत २०६७ फाल्गुन शुक्ल-३ श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव

www.swaminarayanmuseum.com/org

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

) जेतपर (मच्छु–मूलीदेश) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री

) वडुगाँव में स्नेह सत्संग संमेलन प्रसंग पर दीप प्रगट करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में महंत स्वामी देव स्वामी तथा शा. नारायणवल्लभदासजी ।

) केनेडा, टोरन्टो अपने मंदिर में धनुर्मास के समय बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का अलौकिक दर्शन ।

) मोटेरा में प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के पारायण प्रसंग पर उद्घाटन करते हुये छोटे पी.पी. स्वामी ।

) देवीपुर (मूलीदेश) गाँव में शोभायात्रा में दर्शन देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी ।

) जमीयतपुरा प्रभा हनुमानजी मंदिर के शाकोत्सव प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

) नारायणघाट मंदिर में श्री नरनारायणदेव की पदयात्रा में दर्शन देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में देव स्वामी, राम स्वामी तथा संत हरिभक्त ।

) ओकलेन्ड मंदिर में बालको के शिबिर की एक झलक ।

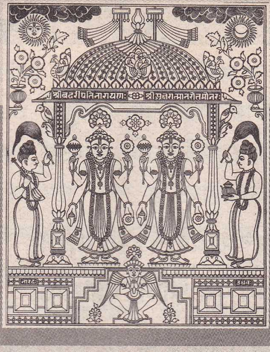

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ३ | अंक : ३४ | फरवरी-२०१०

अ नु क्र म णि का

१. अस्मदीयम् २

२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ३

३. पुष्पदोलोत्सव तथा रंगक्रीडा ४

४. हरिद्वार पवित्र गंगा में २०10 का पूर्ण महाकुंभ पर्व ५

५. आनंद की लहर : तपस्वी संत ६

६. सद्‌गुरु श्री ब्रह्मानंद स्वामी ७

७. श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का धर्मवंशी आचार्यपद ८

८. सत्संग सुरभि : यही हमारी प्रतिष्ठा है १०

९. सत्संग बालवाटिका १२
 (१) समय रहते सावधान
 (२) कल्याण ही अनोखी रीत

१०. भक्ति सुधा १४
 (१) प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से अपना जीवन कैसा है
 (२) श्रीहरि का चमत्कार
 (३) प्रशंसा की बलिहारी

११. प्रश्न पेटी १६

१२. सद्संग समाचार १७

सम्पादकीय

फाल्गुन मास अर्थात् रंगोत्सव का महीना, इसीलिये भगवान स्वामिनारायणने इसी महीने में श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा का निर्णय किया होगा। आज से १८८ वर्ष पूर्व श्रीजी महाराज ने फाल्गुन शुक्ल-३ को करोडो जीवों के मोक्षार्थ अपनी बांहो में भरकर भरतखंड के अधिपति श्री नरनारायणदेव को अपना स्वरुप मानकर प्रतिष्ठित किया तथा सभी को ऐसी आज्ञा दिया कि श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में तथा मेरे स्वरुप में कोई अन्तर नहीं है। जो हममें तथा श्री नरनारायणदेव में भेद समझते हैं वे हमें पहचान नहीं सके। ऐसे महाप्रतापी श्री नरनारायणदेव की पूजा - शरणागति तथा भक्ति मोक्ष को देने वाली है। श्री नरनारायणदेव का यह स्वरुप इहलौकिक सर्वविधसुख को देने वाला है। आज सत्संग में बहुत सारे ज्ञानी है, वे ऐसा मानते हैं कि महाराज के स्वरुप से यह स्वरुप भिन्न है। जो ऐसा कहते हैं वे महाराज की आज्ञा का द्रोह करते है। आगामी फाल्गुन शुक्ल-३ को श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव धूमधाम से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा सम्पूर्ण धर्म कुल की उपस्थिति में मनाया जायेगा।

फाल्गुन महीने का मध्य भाग अर्थात् फाल्गुन शुक्ल-१५ (होली) का दिन। संसार जिस दिन होली खेलता है अर्थात् रंग में जिस दिन रंग जाता है उस दिन भगवान के भक्त प्रभु की भक्ति के रंग में रंग जाते हैं। होली का दूसरा दिन अर्थात् धुलहटी। सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का प्रागट्योत्सव सतयुग में धर्मदेव तथा मूर्तिदेवी के तपः फलस्वरुप प्रभुने ऐसा वरदान दिया कि "आप के घर हम चार स्वरुप से प्रगट होंगे।" फाल्गुन कृष्ण-१ के दिन साबरमती के किनारे धर्मदेव के आश्रम में प्रभु नर, नारायण, हरि, कृष्ण इन चार रुपों में प्रगट हुये। उन्हीं नरनारायणदेव के प्रागट्योत्सव को भव्यातिभव्य ढंग से धूमधाम के साथ श्री नरनारायणदेव के प्रांगण में मनाया जायेगा।

श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव तथा श्री नरनारायणदेव के जन्म जयन्ती उत्सव का दिव्य लाभ लेने के लिये सपरिवार पधारकर जीवन को धन्य बनाये, ऐसा अभ्यर्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के क़ार्यक्रम की रुपरेखा
(जनवरी-२०१०)

१. श्री प्रभा हनुमानजी जमीयतपुरा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर, सुरेन्द्रनगर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

४. धनसुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

५-६. श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज धनुर्मास में धून प्रसंग पर पदार्पण।

७. श्री स्वामिनारायण मंदिर चूडा (मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

८. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणकोल (ता. साणंद) में पदार्पण।
श्री प्रवीणभाई मंगलदास पटेल के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१०. वडुगाँव में सत्संग युवा शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१४. से २१. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोम्बासा सुवर्ण जयंती महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर मयूरनगर (मूलीदेश) सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री जयंतीभाई रामदास पटेल के यहाँ महापूजा में पदार्पण-सरसपुर।

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर चाटडी (मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण.

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर धरियावद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा (अहमदाबाद) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री अरविंदभाई सेंधालाल पटेल के यहाँ पदार्पण, बोपल।

३१. श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण.
जे.डी. आसा कास्टींग यज्ञ प्रसंग पर पदार्पण - नरोडा।

पुष्पदोलोत्सव तथा रंगक्रीडा

- शा. स्वा. अभयप्रकाशदास गुरु
महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

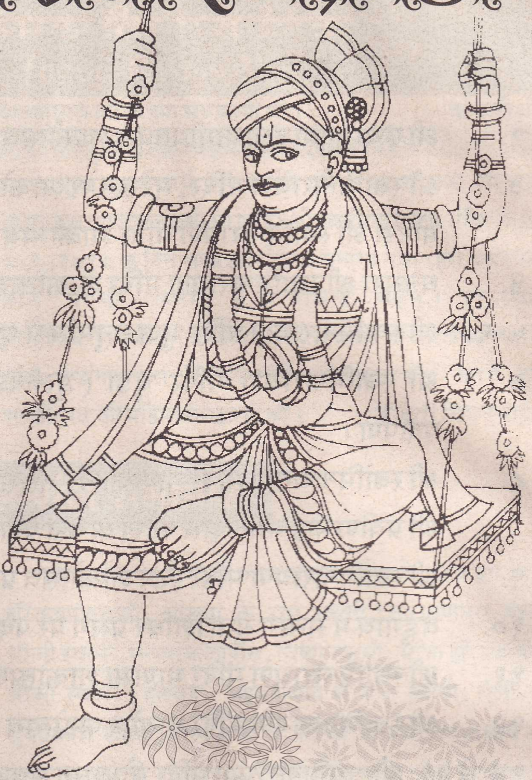

आज से करीब सवा दो सौ वर्ष पूर्व भगवान स्वामिनारायण के समय में चारो तरफ अधर्म फैला हुआ था। भगवान स्वामिनारायण जब से प्रगट हुये उस समय से धीरे-धीरे अधर्म का नाश करके सद्धर्म की स्थापना कर रहे थे। श्रीहरिने देखा कि चारो तरफ अधर्म व्याप्त हो चुका है। उत्सवो में भी नीति नियम रहा नहीं। परंपरा का नाश होता देखे। जिस जन्माष्टमी को भगवान की भजन-कीर्तन होनी चाहिये उस दिन लोग मदिरापान करते थे। शिवरात्रि के दिन मदिरा, भांग, इत्यादि का भोग भगवान शिव के लिये दिखावा मात्र था। नवरात्री तथा यज्ञ में पशु की बलि चढाकर मांस भक्षण हो रहा था।

होली के दिन आनंद के साथ रंग खेलने की जगह गाली गलोज, अपशब्द, कांदव कीचड़ का वरसात होता था। महाराज यह सब देखकर मन में विचार करने लगे कि यह परम्परा रोकने लायक है। शुद्ध धर्म की तरह अधर्म चारो तरफ फैला हुआ है। प्रभु ने दिव्य संकल्प किया और उत्सव मनाने की शुरुआत किये। उस उत्सव से सभी को आनंद भी हुआ और कुरीतियां - अधर्म सभी चले गये। प्रत्येक उत्सव जैसे दशहरा का जन्माष्टमी का, दीपावली का, अन्नकूट का उत्सव खूबधूमधाम से मनाया जाने लगा।

भगवान स्वामिनारायण जब अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव करने के लिये पधारे उस समय महाराज की एकान्तिक भक्ता महिलायें स्वागत के लिये आगे आयी। दूसरे दिन स्वयं महाराज महाप्रभु श्री नरनारायणदेव का पूजन-अर्चन किये। सभी मिलकर आपस में गुलाल उड़ाकर रंगोत्सव मनाने लगे।

महाराज जब सिंहासन पर आकर विराजमान हुये उस समय बहुत सारे भक्त, रंग से भरे हुये घड़े लेकर आये एक दूसरे के ऊपर रंग फेंकने लगे। गाँव के भक्त भी आये हुये थे। पिचकारी से रंग की बरसात करने लगे। महाराज भी इन भक्तों को प्रसन्न करने के लिये गुलाल उड़ाने लगे। भक्त भी हाथ में पिचकारी लेकर महाराज के ऊपर रंग डालने लगे। संत भी गुलाल तथा रंग खेलने लगे। इस तरह एक दूसरे पर रंग-गुलाल फेंकने लगे।

रामप्रतापभाई, इच्छारामजी, मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, नित्यानदं स्वामी, शतानंद स्वामी सच्चिदानंद स्वामी, सुराखाचर, सोमला खाचर, अलैया खाचर, भगुजी, वस्ताखाचर, झीणाभाई, प्रागजी पुराणी, मायाराम भट्ट, जोबन पगी इस तरह वे सभी आपस में आनंद के साथ रंग खेलने लगे।

सोमला खाचर रंग का घड़ा सुरा खाचर के ऊपर डाल दिये। ब्रह्मानंद स्वामी नित्यानंद स्वामी के मुंह में गुलाल का लेपन कर दिये। महाराज यह दृश्य देखकर स्वयं सभी के ऊपर रंग डालने लगे। बाद में सभी साबरमती में जाकर स्नान किये। इस तरह महाराज प्रत्येक उत्सव को धूमधाम से मनाते और दूषण को दूर करते रहे आज भी हम महाराज की उस परंपरा को मनाते हैं और आगे भी मनाते रहें ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना।

हरिद्वार-पवित्र गंगा में २0१0 का पूर्ण महाकुंभ पर्व

– साधु व्रजभूषणदास गुरु स्वामी श्यामसुंदरदासजी (हरिद्वार)

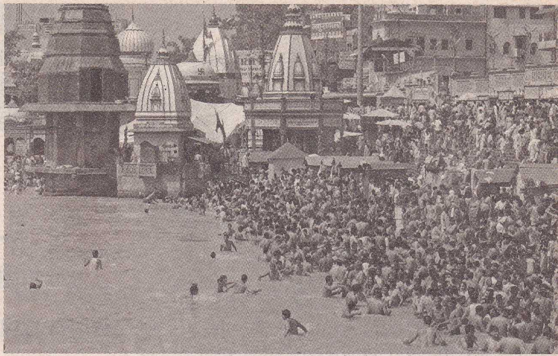

अकाल मृत्यु हरणं सर्व व्याधिविनाशनम् ।
विष्णु पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

देवताओं की भूमि अर्थात् हरिद्वार । भारत देश में चार स्थानों पर कुम्भ मेला होता है । जिसमें हरिद्वार, इलाहाबाद, उज्जैन तथा नासिक । यह कुम्भ मेला निश्चित राशी तथा नक्षत्र पर होता है।

श्री नरनारायणदेव देश का अपना श्री स्वामिनारायण मंदिर, शंकराचार्य चौक में विराजमान है । जिसमें राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से संत-हरिभक्तों के सहयोग से इस सदी का प्रथम कुम्भ मेला गंगा के किनारे हरिद्वार में आयोजित हुआ है । हिमाचल प्रदेश में से उत्तराखंड अलग राज्य बना इसका भी यह प्रथम कुंभ है । इस महाकुंभ पर्व में अपने संप्रदाय के हजारो अनुयायी लाभ लेने पधारने वाले हैं । जिससे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी ने इस प्रसंग पर कथा, पूजा, धुन, भजन, कीर्तन, समूहजन-मंगलपाठ इत्यादि का कार्यक्रम किया है । इसके अलांबा यात्रिकों के लिये अन्नक्षेत्र भी चालू किया है । इसलिये आप सभी भक्तजनों से निवेदन है कि अनाज, दाल, चावल, गेहूं, घी, तेल, गुण, चीनी इत्यादि का तन, मन तथा धन से यहाँ के मंदिर में दान करके अपने जीवन को धन्य बनाइये ।

पूर्ण कुंभ महापर्व स्नान माहात्म्य

अश्वमेघ सहस्त्राणि, वाजपेय शतानिच ।
लक्षप्रदक्षिणां भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥
(विष्णुपुराण)

१ करोड वर्ष नर्मदा में बैठकर जो फल मिलता है वह मात्र कुंभ स्नान से प्राप्त होता है।

सहस्त्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानं शतानिच ।
वैशाखे नर्मदा कोटिः कुम्भ स्नानेन तत्फलम्
(स्कन्द पुराण)

एक करोड़ गाय के दान का जो फल है वह एकवार कुंभ स्नान से प्राप्त होता है।

ऐसा अति सुंदर कुंभ स्नान का फल है, करोड़ो काम बिगाड़कर भी कुंभ स्नान करना चाहिये ।

कुंभ स्नान की जानकारी

१४ नजवरी मकरसंक्रांति, १५ जनवरी मौनी अमावास्या सूर्यग्रहण, २० नजवरी वसंत पंचमी, ३० जनवरी माघी पूर्णिमा, १२ फरवरी महा शिवरात्री प्रथम शाही स्नान, १५, मार्च सोमवती अमावस्या द्वितीय शाही स्नान, १६ मार्च नवरात्रारम्भ, २४ मार्च रानमवी श्रीहरि जयंती, ३० मार्च वैरागी अखाडा स्नान, १४ अप्रैल मेष संक्रान्ति तृतीय शाही स्नान, २८ अप्रैल वैशाख पूर्णिमा अधिक मास पूर्णिमा, १४ मई वैशाख अधिक मास पूर्ण, १६ मई अक्षय तृतीया पूर्ण, २० मई गंगाजयंती, महा कुंभ मेला की समाप्ति ।

आनंद की लहर

तपस्वी संत

– शा. हरिजीवनदास (हिंमतनगर महंत)

हुताशनी (होली) के अवसर पर सभी संतो को महाराज गढडा बुलाये । महाराज का संदेश सुनते ही संत जैसे नदियाँ समुद्र में मिलने के लिये आतुर रहती हैं ऐसे संत त्वरा करने लगे ।

संत कुंडल गाँव तक पधारे है यह समाचार सुनकर महाराज अश्व पर सवार होकर कुंडल पधारे । सभी का वहीं मिलाप होता है । संतो के अनुकूल तथा महाराज के अनुकूलि भोजन की तैयारी की गयी थी । संत षडरस का परित्याग करने वाले थे, नीति नियम भोजन में रखते थे । यह देखकर सुरा खाचर को संतो के प्रति खूब मान हुआ । दादा अपनी पगडी उतारकर महाराज के चरण पर रखकर प्रार्थना करने लगे कि हे महाराज ! आप इन संतो पर कृपा कीजिये, देखिये इन का शरीर कितना कृश हो गया है । इनके रसास्वाद का नियम छोड़वा दीजिये । कारियाणी की सभा में स्वामीने एक नाटक किया । रात्रि में सभा थी, उन्हें दिखाई नहीं दे रहा हो ऐसा वे नाटक करते हुये हाथों के इसारे से चलने लगे । हाथ का इशारा करते हुये कहने लगे कि वह साधु कहाँ गया ? यह सुनकर शिष्य सामने आकर कहा स्वामी क्या आज्ञा है ? मेरी वीणा ले आ महाराज को कीर्तन सुनाना है । यह देखकर महाराज हंसने लगे । महाराजने कहा अरे ! ब्रह्म मुनि दिखाई नहीं दे रहा है क्या ? महानुभावानंद स्वामी ने कहा महाराज ये सभी संत रसास्वाद त्याग करके जो अति कठिन नियम पालते हैं उसी का यह परिणाम है । महाराज यह सुनकर खूब प्रसन्न हुये । उन्हें दया आयी और सभी को बुलाकर कहे कि आज से आप सभी को षडरस के नियम से हम मुक्ति दे रहे हैं । जीवा खाचर की उसदिन रसोई थी । सभी आनंदित हो गये । श्रीहरि संतो को खूब भोजन खिलाया ।

माउन्ट आबू की तलहटी में शिरोही जिला में बारोट शंभुदान तथा लालूबा के यहाँ ब्रह्मानंद स्वामी का जन्म इ.स. १७७२ (सं. १८८२) में वसंत पंचमी मंगलवार को हुआ था। उनका पूर्वाश्रम का नाम लाडुदान था। वे बड़े तेजस्वी थे। मुख विम्ब प्रकाशमय था।

अपनी तेजस्विता के कारण गुजराती का अभ्यास थोड़े समय में पूर्ण कर लिये। पिंगल शास्त्राभ्यास करने का सम्पूर्ण खर्च उदयपुर के राजा ने किया। धमडका गाँव (कच्छ) में संस्कृत तथा विंगल शास्त्र का अभ्यास किये। उन्हे अनेक राजाओं से पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उन्हे राज कवि भी कहा जाता था।

भुज में सहजानंद स्वामी से मिलने गये। महाराज के दर्शन से उनके आनंद की सीमा न रही। गढडा जाते समय उन्होंने मन ही मन संकल्प किया कि मुझे गुलाब का हार पहनायें तथा चरणारविंद में सोलह चिन्ह का दर्शन करावें तो ही हम उन्हें भगवान मानेंगे। ये दोनो संकल्प उनके सिद्ध हुये थे। उसी समय वे कीर्तन की रचना किये।

''आज की घड़ी रे धन्य आज की घड़ी।''

उनके मन में भगवान का भाव दृढ होगया। उन्हें जो कुछ भी राजदरबारों में पुरस्कार मिले थे वे सभी महाराज के चरणों में अर्पण करके दीक्षा लेलिये। महाराज उन्हें दीक्षित करके ''ब्रह्मानंद स्वामी'' नाम रखे। वे मारवाडी, व्रजभाषा कच्छी, गुजराती, संस्कृत, इत्यादि भाषा के जानकार थे। उनकी काव्य शक्ति अद्भुत थी। वे सावधान भी थे।

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, तप, संयम तथा सदुपदेश उनके कीर्तनो से प्रतीत होता है। उनके पदों में से सहृदय भाव, संवेदना प्रीति की अभिव्यक्ति होती रहती है।

- लटकारा तारे लटके रे, लेरखडा हुं लोभाणी रे...
- रे शिर साटे नटवरने बरीए......
- रे सगवण हरिवरनुं साचु ....

बीजुं सर्वे क्षणभंगुर काचु......

ब्रह्मानंद स्वामी ने खूब कष्ट करके वडताल, जूनागढ, मूली इत्यादि धामों में शिखरी मंदिर का निर्माण करवाये थे। श्रीहरि के साथ ब्रह्मानदं स्वामी का सखा भाव था। अरे ! ब्रह्मानंद स्वामी जैसा संत तो पूरे ब्रह्मांड में नहीं मिलेंगे। महाराज वचनामृत में वताया है कि ''ब्रह्मानंद स्वामी'' हनुमानजी की तरह यति है.... ब्रह्मानंद स्वामी प्रत्येक क्रिया में तीनो अवस्था में महाराज का अखंड दर्शन करते रहते थे। वे करीब १७ जितने ग्रन्थ लिखे थे। १०००० से भी अधिक कीर्तन बनांये थे। स्वामी के हृदय से प्रीति का भाव जब फूटता तो राग-रागिनी की धारा वह पड़ती थी। जिस की प्रतीति उनके पदो से होती है। पंच विषय के त्यागी ऐसे कवि स्वामी देह की नश्वरता को बताते हुये कहते हैं कि -

आ तन रंग पतंग सरीखो,
जाता वार न लागे जी।
असंख्य गया धन संपत्ति मेली,
तारी नजरु आयेगी ॥

उनके जन्म स्थान ''खाण'' में आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज की प्रेरणा से शिखरी मंदिर की ध्वजा आज भी लहरा रही है। जिसे आगामी वर्ष में २५ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से रजत जयंती महोत्सव धूमधाम से संपन्न होगा। यह खाण गाँव सदा के लिये ''सत्संग की खाण'' बने यही अभ्यर्थना।

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का धर्मवंशी आचार्यपद

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

इस भरत खंड में सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने मनुष्य अवतार धारण करके शुद्ध सनातन वैदिक धर्म की स्थापना की है । इस लोक में सभी के लिये सदाचार का सुन्दरमार्ग निर्माण किया है । अपने आश्रितों के आत्यन्तिक कल्याण के लिये तीन गूढ रहस्यरुप सत्शास्त्र, देव मंदिर, आचार्य पद की स्थापना की । जगत में कितने लोग ज्ञानाचार्य, योगाचार्य, धर्माचार्य कहे जाते है । आज तो विद्यालयों में न्यायाचार्य, साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य इत्यादि की पदवी दी जाती है । इसके अलांवा विश्व में कई जगहो पर सन्यासी, गृहस्थ, स्त्री-आचार्य का कार्य करती है । परन्तु स्वामिनारायण संप्रदाय का आचार्य पद अनेक विशेषताओं से युक्त है।

श्री सहजानंद स्वामीने अपने आश्रितों के लिये अपने स्थान पर धर्मवंशी आचार्य को स्थापित किया । सम्प्रदाय की व्यवस्था के लिये अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश तथा वडताल श्री लक्ष्मीनारायणदेव इस तरह दो गादी स्थान बनाया । इन दोनो देश विभाग का लेख लिखवाया । सत्संगियों को आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहने की आज्ञा की । कोई भी अवतार आचार्यपद की स्थापना की हो इतिहास में नहीं मिलता । धर्म की रक्षा के लिये आचार्य पद ''गृहस्थ'' के रुप में प्रतिष्ठित किया । महिलाओं की गुरु रुपा आचार्य पत्नी (गादीवाला) की स्थापना की ।

सम्प्रदाय के आद्यगुरु नारायण जो गृहस्थाश्रमी हैं । सभी संप्रदाय में व्यासजी को सभी आचार्यो का आचार्य गुरुओं का गुरु माना जाता है. वे व्यासजी भी गृहस्थाश्रमी है । अलौकिक तपोबल से ऋषियों में श्रेष्ठ तथा ज्ञानियों में श्रेष्ठ वशिष्ठजी तथा याज्ञवल्क्यजी गृहस्थाश्रमी थे । शुकदेवजी के गुरु जनक गृहस्थाश्रमी थे । मुनि अत्रि, विष्णु, हारिक, अंगिरा, यम, आपस्तंब, व्यास, कात्यायन, सैवर्त, पराशर, बृहस्पति, शंख उशनस, दक्ष, लिखित, शातातप,, गौतम, वशिष्ठ जैसी वीस स्मृतिया जो मानव धर्म शास्त्र के रुप में प्रतिष्ठित हैं । इन सभी स्मृतियों के रचयिता गृहस्थाश्रमी थे ।

भावी आचार्यो का चयन गृहस्थाश्रमी में से करना योग्य है या त्यागियों में से करना योग्य है ? धर्मकुल में से करना या

अन्यथा कुछ और विचार करना ? इस परिप्रेक्ष्य में श्रीहरिने त्यागियों की तथा गृहस्थाश्रमियों की एक विशाल सभा का आयोजन वडताल में किया था । सभी के मन्तव्य लिये गये थे । परंतु सभी के प्रतिनिधिरुप, सम्प्रदाय की जिसे मां कहा जाता था ऐसे मुक्तानंद स्वामी ने महाराज से हाथ जोड़कर कहा कि ''धर्मदेव स्वयं गृहस्थाश्रमी थे । उन्हें रामानंद स्वामीने आज्ञा दी थी कि आप मुमुक्षुओं को दीक्षा देकर शिष्य बनाकर उपदेश दीजियेगा । जीवन में स्त्री, द्रव्य, मान तथा रसास्वाद से त्यागी को दूर रहना चाहिये । आचार्य पद पर विराजमान व्यक्ति को इन से दूर रहना चाहिये, इस लिये त्यागियों के लिये यह आचार्यपद योग्य नहीं है । उन्होंने विशेष रुप से यह भी बताया कि धर्मकुल में से जो सुपात्र गृहस्थाश्रमी हो उसी की नियुक्ति करना श्रेयष्कर होगा ।

सम्प्रदाय का विस्तार गुजरात में उत्तरोत्तर वढता जा रहा है इसलिये दो गादी संस्थान बनाये गये । श्रीजी महाराज के

४५ वर्ष अन्तर्ध्यान के बाद इन्गलेन्ड से दो अंग्रेज सर मोनियर विलियम्स जो संस्कृत के प्रखर पंडित् थे तथा प्रसिद्ध इतिहासकार श्री हेनरी ज्योर्ज ब्रीग्स भारत का भ्रमण करने आये। वे लिखते हैं कि अठ्ठारवीं सदी में संप्रदाय के एक हजार साधु, तीन सौ ब्रह्मचारी तीन सौ पार्षद दो सौ सेवक पांच लाख गृहस्थ परिवार थे।

श्री सहजानंद स्वामी द्वारा लिखाये गये देश विभाग कि विशेषता यह है कि सम्प्रदाय का आचार्य कौन हो सकता है स्पष्ट लिखा हुआ है। स्वहस्त लिखित शिक्षापत्री में दोनो गादी का तथा गादी के आचार्यों का उल्लेख किया हुआ है। आचार्य के नियम तथा गादीवालाजी के नियम का भी उल्लेख किया गया है। सम्प्रदाय के आचार्य पद की नियुक्ति का विशेष प्रकार है। धर्मदेव की परंपार में आने वाला गृहस्थ पुरुष संप्रदाय के आचार्य पद का हकदार हो सकता है। उन्हीं का पुत्र हो या धर्मकुल का धर्म परायण हो, सम्प्रदाय निष्ठावाला हो, ऐसे व्यक्ति को त्यागी तथा गृहस्थों की अनुज्ञालेकर आचार्य पद दिया जा सकता है।

आचार्य महाराजश्री को यदि दो पुत्र हों तो ज्येष्ठ पुत्र को गादी पर बैठाना चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है, जो सुपात्र हो उसी की नियुक्ति करनी चाहिये। पत्रियों की परम्परा में से किसी को आचार्य पद नहीं दिया जा सकता। यदि आचार्य पदारुढ को सन्तान न हो या योग्य सन्तान न हो तो धर्मदेव के कुल में से जो योग्य हो उसे आचार्यपद देना चाहिये।

सांख्ययोगी बहनों को तथा गृहस्थामहिलाओं को आचार्य पत्नी (गादीवाला) गुरु मन्त्र दे सकती हैं। आचार्य पद प्रतिष्ठा वाला है। इसलिये कि यह पद श्री हरि का है। श्रीहरि अपने दैवत्व आचार्यपद में प्रतिष्ठित किये हैं। आचार्य पद राजगादी का नहीं है बल्कि धर्मगादी का है। धर्मगादी का संचालन कोई सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता है। गढडा के मध्य प्रकरण में श्रीहरिने कहा है कि भगवान धर्मधुरंधर हैं। आचार्यपद भी श्रीहरि का है अतः आचार्य को भी धर्मधुरंधर कहा जाता है। धर्म की रक्षा करना आचार्य पद की गरिमा है। श्री अर्थात् लक्ष्मीजी अर्थात् भगवान की भक्ता। हिन्दु शास्त्रानुसार नव अंक पूर्ण माना जाता है। इसलीये अनंत विभूति श्रीयह उनके नाम के आगे १००८ लिखा जाता है।

शिक्षापत्री के ८४ वें श्लोक में श्रीहरिने लिखा कि आचार्य पद श्रीहरि का अपर स्वरुप है। इस स्थान के महत्व को सदा ध्यान रखना चाहिये।

यह सम्प्रदाय, गुरुमुखी सम्प्रदाय है। इस आचार्य पद को लोग मोक्षाधायक मानते है। श्रीजी महाराज की आज्ञा का पालन करने से त्यागी-गृहस्थ आबाल नर नारी को श्रीहरि की असीम कृपा मिलती है। मंदिर में मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा करने का अधिकार मात्र आचार्य महाराजश्री को ही है। इस आचार्य पद का स्थान सर्वावतारी श्रीहरिने स्वयं अपने हाथों से सं. १८८२ कार्तिक शुक्ल-११ के दिन वडताल में किया था। इस सन्दर्भ में लेख, साक्षियों का हस्ताक्षर सं. १८८३ मार्गशीर्ष शुक्ल-१५ को गढडा में दादा एभल के दरबार करवाया था।

अपने आगामी उत्सव

फाल्गुन शुक्ल-२ : मंगलवार ता. १६-२-२०१० चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में सुवर्णजयंती महोत्सव।

फाल्गुन शुक्ल-३ : बुधवार ता. १७-२-२०१० को श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का १८८ वाँ पाटोत्सव।

फाल्गुन शुक्ल-४ : गुरुवार ता. १८-२-२०१० सापावाडा मंदिर का पाटोत्सव।

फाल्गुन शुक्ल-५ : शुक्रवार ता. १९-२-२०१० कांकरिया मंदिर का पाटोत्सव एवं चौरासी गाँव के ब्राह्मणों का ब्रह्मभोज।

फाल्गुन शुक्ल-७ : रविवार ता. २१-२-२०१० को खाण मंदिर का पाटोत्सव।

(नोट : आगामी वर्ष में खाण मंदिर का रजत जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा)

फाल्गुन शुक्ल-८ : सोमवार ता. २२-२-२०१० एप्रोच (बापूनगर) मंदिर का पाटोत्सव।

फाल्गुन कृष्ण-२ : मंगलवार ता. २-३-२०१० को श्री नरनारायण जयंती अहमदाबाद मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों भव्य रंगोत्सव।

फाल्गुन कृष्ण-८ : सोमवार ता. ८-३-२०१० को जेतलपुरधाम में श्री रेवतीबलदवेजी हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव।

सत्संग सुरभि

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

यही हमारी प्रतिष्ठा है

जिसके शरीरकी हड्डी गिनी जासके ऐसी कृश काया वाले, मस्तक पर जटा, १८ वर्ष की उम्र, देखते मुग्धहो जाने की मोहिनी मूर्ति, संवत १८५६ श्रावण शुक्ल दसमी, जूनागढ की तरफ दृष्टि करके चले जा रहे थे। मार्ग में मिलने वाले तपस्वी नागा बाबा, संन्यासी तथा तीर्थवासी सभी अपने स्वरुप का परिचय कराते थे।

दत्तात्रेय भगवान की चरण पादुका का दर्शन करके गिरनार उतरकर नीलकंठ वर्णी गोधावाव के पास पधारे। यहाँ सदा व्रत चल रहा था। अनेक जीवों के उद्धार करने का संकल्प लेकर जहाँ सदाव्रत चलता वहाँ एकदाना भी उनका लेकर कल्याण करते थे।

जहाँ भेख वहाँ भगवान इस महिमा की दृष्टि से लोग सदाव्रत चलाते थे। ऐसे सदाव्रतो में नागा वैरागी भी भोजन करते तथा अन्य साधु-संन्यासी भी भोजन करते थे।

नीलकंठवर्णी धर्मदास के सदाव्रत की पंक्ति में जाकर बैठ गये। उसी सयम कोई बाबा आकर नीलकंठ वर्णी को पंक्ति में से उठादिया। दूसरी पंक्ति में जाकर बैठे तो वहां दूसरे वैरागीने हटाया इस तरह कईबार अपमानित होने पर भी वर्णी को कोई दुःख नहीं हुआ, क्योंकि उन्हे सदाव्रत चलाने वालों का कल्याण करना है। भोजन कहीं नहीं मिला, अपमान अवस्य मिला। फिर भी लेशमात्र भी अन्तः पीड़ा नहीं हुई। उनके तेज में थोड़ा भी झांका नहीं पड़ा। हाटकेश्वर महादेव मंदिर गये वहाँ मंदिर जाते समय उनके पीछे पीछे एक साठ वर्ष का संन्यासी भी आया। वह संन्यासी वर्णी के साथ जो व्यवहार हुआ था वह सब देखा था। इसलिये वह संन्यासी भी भोजन नहीं किया। संन्यासी वर्णी की सहनशीलता तथा उनकी माधुरी मूर्ति को अपने हृदय में उतार लिया था। इसलिये वर्णी के पीछे-पीछे साथ होलिया। साथ में दोनो रहे। हाटकेश्वर महादेव का एक नागर ब्राह्मण भक्त था वह प्रतिदिन दर्शन करने आता था। वह संन्यासी उस भक्त को बुलाकर कहा कि "ये बाल ब्रह्मचारी है, देवता पुरुष है, ये भूखे है, इन्हें भोजन करायेंगे तो आपका कल्याण होगा।"

वे नागर भक्त नीलकंठ वर्णी के पास गये। चरणस्पर्श करते ही उन के हृदय में परम शांति का अनुभव होने लगा। शिव भक्त हाथ जोड़कर कहने लगा महाराज ? मेरी इच्छा है भोजन कराने की, आप स्वीकार करेंगे ?

महाप्रभु उसकी भावना को समझकर कहे कि, ले आओ . नागर ब्राह्मण तुरंत घर जाकर पूड़ी हलुआ तैयार कराकर ले आया। महाराज अपने पास से बाल मुकुन्द को निकाले उनका भोग लगाया और संन्यासी को बुलाकर साथ में वह प्रसाद ग्रहण किये। बाद में प्रसाद उस नागर ब्राह्मण को भी दिये। उस भूखे बालक ब्रह्मचारी को तथा सन्यासी को भोजन कराकर वह नागर ब्राह्मण अपने जीवन को धन्य माना। आजतक की शिवोपासना सार्थक मानने लगा। जिस बालरुप नीलकंठ वर्णी को देखा वही रुप घर जाकर बार-बार स्मरण करने लगा। नीलकंठ वर्णी ने भी उस ब्राह्मण को रात्रि में शिव के रुप में दर्शन दिया। रात्रि में वह संन्यासी ज्ञान गोष्ठी महाप्रभु के साथ किया। साधु असाधु के नियम, भगवान की भक्ति से मोक्ष तथा संसार की असारता इत्यादि के विषय में नीलकंठ वर्णी ने उस संन्यासी को बताया।

उत्तर हिमालय से तीर्थाटन करते हुये वह संन्यासी गुजरात में आया था। उसका साक्षात् महाप्रभु वर्णी से यहीं पर हुआ। जाते समय वह संन्यासी महाप्रभु से मांगा कि हे महाराज ! जिस तरह आपने मुझे अपना प्रसाद ग्रहण करवाया ठीक इसी तरह मेरे अंत समय में भी कृपा कीजियेगा।

नीलकंठने तथास्तु कह दिया। यहीं से भगवान तथा भक्त दोनो अलग हुये।

आषाढी संवत् १८७४ का वर्ष था। महाराज जेठ मास से आश्विन शुक्ल पक्ष तक गढपुर में निवास किये। चातुर्मास के समय महाराज अक्षर कक्ष में सन्ध्यावंदन करके विराजमान थे। महाराज के संमुख संत विराजमान थे। उस समय महाराज स्वस्वरुप की बात कर रहे थे। सभी

जिसके शरीरकी हड्डी गिनी जासके ऐसी कृश काया वाले, मस्तक पर जटा, १८ वर्षकी उम्र, देखते मुग्धहो जाने की मोहिनी मूर्ति, संवत १८५६ श्रावण शुक्ल दसमी, जूनागढ की तरफ दृष्टि करके चले जा रहे थे। मार्ग में मिलने वाले तपस्वी नागा बाबा, संन्यासी तथा तीर्थवासी सभी अपने स्वरुप का परिचय कराते थे।

दत्तात्रेय भगवान की चरण पादुका का दर्शन करके गिरनार उतरकर नीलकंठ वर्णी गोधावाव के पास पधारे। यहाँ सदा व्रत चल रहा था। अनेक जीवों के उद्धार करने का संकल्प लेकर जहाँ सदाव्रत चलता वहाँ एकदाना भी उनका लेकर कल्याण करते थे।

जहाँ भेख वहाँ भगवान इस महिमा की दृष्टि से लोग सदाव्रत चलाते थे। ऐसे सदाव्रतो में नागा वैरागी भी भोजन करते तथा अन्य साधु-संन्यासी भी भोजन करते थे।

नीलकंठवर्णी धर्मदास के सदाव्रत की पंक्ति में जाकर बैठ गये। उसी सयम कोई बाबा आकर नीलकंठ वर्णी को पंक्ति में से उठादिया। दूसरी पंक्ति में जाकर बैठे तो वहां दूसरे वैरागीने हटाया इस तरह कईबार अपमानित होने पर भी वर्णी को कोई दुःख नहीं हुआ, क्योंकि उन्हे सदाव्रत चलाने वालों का कल्याण करना है। भोजन कहीं नहीं मिला, अपमान अवस्य मिला। फिर भी लेशमात्र भी अन्तः पीड़ा नहीं हुई। उनके तेज में थोड़ा भी झांका नहीं पड़ा। हाटकेश्वर महादेव मंदिर गये वहाँ मंदिर जाते समय उनके पीछे पीछे एक साठ वर्ष का संन्यासी भी आया। वह संन्यासी वर्णी के साथ जो व्यवहार हुआ था वह सब देखा था। इसलिये वह संन्यासी भी भोजन नहीं किया। संन्यासी वर्णी की सहनशीलता तथा उनकी माधुरी मूर्ति को अपने हृदय में उतार लिया था। इसलिये वर्णी के पीछे-पीछे साथ होलिया। साथ में दोनो रहे। हाटकेश्वर महादेव का एक नागर ब्राह्मण भक्त था वह प्रतिदिन दर्शन करने आता था। वह संन्यासी उस भक्त को बुलाकर कहा कि "ये बाल ब्रह्मचारी है, देवता पुरुष है, ये भूखे है, इन्हें भोजन करायेंगे तो आपका कल्याण होगा।"

वे नागर भक्त नीलकंठ वर्णी के पास गये। चरणस्पर्श करते ही उन के हृदय में परम शांति का अनुभव होने लगा। शिव भक्त हाथ जोड़कर कहने लगा महाराज ? मेरी इच्छा है भोजन कराने की, आप स्वीकार करेंगे ?

महाप्रभु उसकी भावना को समझकर कहे कि, ले आओ . नागर ब्राह्मण तुरंत घर जाकर पूड़ी हलुआ तैयार कराकर ले आया। महाराज अपने पास से बाल मुकुन्द को निकाले उनका भोग लगाया और संन्यासी को बुलाकर साथ में वह प्रसाद ग्रहण किये। बाद में प्रसाद उस नागर ब्राह्मण को भी दिये। उस भूखे बालक ब्रह्मचारी को तथा सन्यासी को भोजन कराकर वह नागर ब्राह्मण अपने जीवन को धन्य माना। आजतक की शिवोपासना सार्थक मानने लगा। जिस बालरुप नीलकंठ वर्णी को देखा वही रुप घर जाकर बार-बार स्मरण करने लगा। नीलकंठ वर्णी ने भी उस ब्राह्मण को रात्रि में शिव के रुप में दर्शन दिया। रात्रि में वह संन्यासी ज्ञान गोष्ठी महाप्रभु के साथ किया। साधु असाधु के नियम, भगवान की भक्ति से मोक्ष तथा संसार की असारता इत्यादि के विषय में नीलकंठ वर्णी ने उस संन्यासी को बताया।

उत्तर हिमालय से तीर्थाटन करते हुये वह संन्यासी गुजरात में आया था। उसका साक्षात् महाप्रभु वर्णी से यहीं

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० • शृंगार आरती ८-०५

• राजभोग आरती १०-१० • संध्या आरती १८-३० • शयन आरती २०-१५

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

समय रहते सावधान

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

समय एक निश्चित मूलधन है । जो विद्यार्थी उत्तीर्ण नहीं होते उन्हें बीते हुये समय की कीमत समझ में आती है।

एक दिन मजदूर को मजूरी न मिले तो उसे दिन की कीमत समझ में आती है।

एक घन्टे की कीमत परीक्षार्थी को समझ में आती है। एक मिनट की कीमत ट्रेन या वस छूट जाने पर मुसाफर को होती है । एक सेकेन्ड की कीमत ओलम्पिक में पुरस्कार चूकजाने वाले खेलाडी को होती है।

जीवन में प्रत्येक पल का महत्व है । इसे विरला ही जानते हैं । इसलिये प्रत्येक कार्य समय से करना चाहिये तथा प्रत्येक पल ध्येय प्राप्ति के लिये सचेत रहना चाहिये।

घनश्याम महाराज ने वि.स. १८४९ आषाढ शुक्ल-दशमी को प्रातः गृहत्याग किया था । हिमालय की तरफ प्रस्थान किये, तीन दिन तक लगातार चलते रहने से, भूखे पेट होने से पृथ्वी पर गिर पड़े । पुनः ध्यानस्थ होकर सचेत हुये और सामने नदी के किनारे पहुंच कर सन्ध्या वंदन करके जलपान किये, एक वटवृक्ष के नीचे आराम किये । सूर्यास्त हो गया । अंधकार हुआ । भगवानने हनुमानजी का स्मरण किया सूक्ष्मरुप से हनुमानजी उस वट वृक्ष के पास आगये । वह जन्माष्टमी की रात थी । ऊलूक, सियार, वाघ इत्यादि की भयंकर आवाज आती थी । इसके साथ ही बादल की गर्जना के साथ बिजली भी चमकने लगी । शांत मूर्ति श्रीहरि स्वस्वरुप का चिन्त करते हुये समाधिस्थ हो गये ।

उसी समय उसी वट वृक्ष में हजारो भूत के साथ भंयकर एक भैरव आगया । हाथ में त्रिशूल, लाल-लाल आंखे विशाल मुख, तीक्ष दांत, गर्धभ की आवाज, ताड़ की तरफ लम्बा वह भैरव दिखाई देता था । उसका निवास स्थान वह वटवृक्ष था । इससे वह भयंकर आवाज करने लगा । जिस आवाज को सुनकर हनुमानजी भी किल किलाहट की आवाज किये । हनुमानजी की आवाज चारे दिशाओं में व्याप्त होगयी । भूत-भैरव सभी कांपने लगे । प्रभु भी समाधिसे जग गये । भैरव सभी भूतों से कहने लगा इस वंदर को तथा तपस्वी को खाजाओ । ऐसा कहकर स्वयं त्रिशूल हाथ में ले लिया । हनुमानजीने अपने हाथ के मुक्के से भैरव का माथा तोड़ डाले । मुह उल्टी करते हुये वह जमीन पर गिर पड़ा । अन्य भूत-प्रेत भी जहाँ तहाँ बैठे रहे । प्रातः हनुमानजी वर्णी को फल लाकर दिये । प्रभु की आज्ञा लेकर हनुमानजी अदृश्य हो गये ।

हनुमानजी सेवक भी है, सैनिक भी है । रामायण में देखा जाय तो हनुमानजी का प्रत्येक कार्य समय के अनुसार हुआ था । सीताजी की खोज समय से किये । समुद्र पार समय से किये । लंका समय से जलाये । घायल लक्ष्मणीजी को जड़ी बूटी समय से लाकर दिये । अयोध्या में आकर भरतजी को भी प्रभु राम वापस आ रहे हैं यह समाचार समय से दिये हनुमानजी समय से आकर भैरव को मारकर प्रभु को फल लाकर समय से दिये । जो समय के महत्व को समझता है । वह भक्ति में, भजन में, सेवा में तथा अन्य किसी कार्य में आलस्य न करे । तभी वह उत्तरोत्तर अपने कार्य में सफळ होता रहेगा । इसलिये आवश्यक है कि अभ्यास के साथ भजन भक्ति, नियम-पूजा करके भगवान की भजन करनी चाहिये ।

बालमित्रो ! आज तो प्रत्येक घर में या घर की प्रत्येक

दीवाल पर घड़ी होती है। घड़ी केवल शोभा के लिये लगायी रहती है क्या ? समय के महत्व को समझने वाले का जीवन सुखी होता है। इसलिये इस महत्व को समझकर सुखी होने का प्रयत्न करना चाहिये।

•

कल्याण ही अनोखी रीत

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

गाँव बोटाद की एक सुंदर वात है। युवानी में सत्संग करना तथा स्थिर रहना तलवार पर चलने की बात है। उस समय की बात है जव संत दुष्टों के त्रास को सहन करके सत्संग का प्रचार करते थे। बोटाद का भगादोशी संतो के समागम से सत्संगी होगया। प्रतिदिन पूजा, पाठ, कथा, नीति, नियम करता था। लेकिन उसके पिता को थोड़ा भी यह अच्छा नहीं लगता था। सदा विरोधकरता और कहता कि यह मेरा धर्म नहीं है। यह सब छोड़दे हम लोगों के लिये यह धर्म नहीं है। यदि इसे छोड़ेगा नहीं तो आज से मैं तेरा बाप नहीं और तूं मेरा बेटा नहीं।

पिता की इस वात पर ध्यान दिये विना वह अपनी भजन भक्ति चालू ही रखा। पिता सत्संग छोड़ाने के अनेकों उपाय किया लेकिन सफलता नहीं मिली। पिता का रोष दिन प्रतिदिन बढता ही जा रहा था। उसी अन्तराल महाराज संतो के साथ बोटाद पहुंचे।

भगादोशी महाराज के पास जाकर दंडवत प्रणाम करके सेवा करने लगा। अन्य भक्त भोजन सामग्री लाने लगे। सभी एक एक दिन भोजन कराने का आग्रह करने लगे। महाराजने आज्ञा देदिया की ठीक है क्रमशः सभी के यहाँ प्रसाद ग्रहण करेंगे। इसी समय भगादोशी के मन में हुआ कि मैं भी महाराज को निमंत्रण दूं पर पिताजी तो विरोधी है। क्या करुं ?

एक दिन भगादोशी घर से घी, चीनी लेकर महाराज के पास पहुंच गया और कहने लगा महाराज ! आज मेरी तरफ से रसोई बनेगी। तब महाराज अन्तर्यामी ढंग से सब जानकर उससे पूछे कि यह राशन किससे पूछ कर लाये हो ? भगादोशी हाथ जोड़कर कहने लगा कि हे महाराज आप सब जानते हैं। मेरे पिताजी विरोधी है, उनसे विना पूछे लाया हूँ। महाराज ने कहा, यह लेजा और पिताजी से माफी मांगकर कहना कि, पिताजी महाराज के लिये आपसे विना पूछे सिद्धा ले गया था।

महाराज की आज्ञा को शिरोधार्य करके भगादोशी पिताजी के पास सामग्री लेजाकर पैर में रखकर रोने लगा। पिताजी ने पूछा भगा तूं क्यों रो रहा है। पिताजी, यह राशन आप से विना पूछे संतो के लिये ले गया था। वहाँ महाराज ने यह राशन वापस कर दिया इसलिये कि तूं पिताजी से विना पूछे ले आया है। जा तूं पिताजी की माफी मांगकर उन्हें सौंप देना।

भगादोशी की यह आवाज सुनकर उसके पिता के होश हवाश उड़ गये। उन्हें पश्चाताप होने लगा। आज तक मैं सत्संग का द्रोह करता रहा हूँ। महाराज तो बड़े दयालु है। यही सच्चे भगवान है। यही सच्चे संत है। उनके विचारो में परिवर्तन हो गया और कहने लगे चल बेटा, राशन लेकर महाराज के यहाँ।

सिद्धा लेकर दोनो बाप-बेटे महाराज के पास आये पिता-पंचवर्तमान धारण करके सच्चे सत्संगी हो गये।

जिसमे भगवान के प्रति निष्ठा है वे कभी दुःखी नहीं होते। कभी उनकी आज्ञा पालन में कठिनाई भी होती होगी। उनके वचन कभी कडवे हो सकते हैं। लेकिन महाराज की आज्ञा में विश्वास रखना चाहिये।

हुं हरिनो हरि मम रक्षक, ए भरोसो जाय नही.
जे हरि करशे ते मम हितनु, ये विश्वास तजाय नहिं।

ऐसा दृढ विश्वास रखकर जो भगवान की आज्ञा में वर्तन करे वह सब प्रकार से सुखी होता है।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से अपना जीवन कैसा है

- कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

जीवन सुख तथा दुःख का परिणाम है। इसलिये अपने इस वर्तमान जीवन में पाप तथा पुण्य कर्मो के परिणाम स्वरुप सुख-दुःख, अच्छा खराब चलता रहता है। इस मनुष्य जीवन में पाप तथा पुण्य ये दो बीज हैं। सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण ए तीन मूल हैं। दश इन्द्रियां-श्रोत्र, त्वक, चक्षु, रसना, घ्राण, वाक, पाणि, पाद पायु, उपस्थ तथा चार अन्तःकरण-मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ये सभी उस वृक्ष की शाखा है। इन्हीं के कारण जीवन में सुख दुःख रुपी फल मिलते रहते हैं। उसमें से कौन सा फल प्राप्त करना है वह मनुष्य के हाथ में है। अर्थात् जब हम खराब कर्म करेंगे तो पापरुपी बीज के परिणाम स्वरुप दुःख प्राप्त करेंगे। यदि हम सत्कर्म करेंगे तो उसका परिणाम सुखद होगा। इन्हीं सत्कर्मो से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। परमात्मा को कहीं बाहर खोजने की जरुरत नहीं है। अपने अन्दर ही परमात्मा का वास है। परंतु उन्हें पहचानने के लिये अन्तःकरण में जो चार शत्रु हैं उन्हें जीतना आवश्यक है। इन्हें जीतने के बाद ही परमात्मा का दर्शन संभव है। इस मनुष्य जीवन से ही अक्षरधाम की प्राप्ति संभव है। वह अक्षरधाम कैसा है? वह अक्षरधाम शीतल एवं शांत है। अति तेजोमय करोड़ो सूर्य से भी अधिक तेज वहाँ के मुक्तात्माओं में है। अनंत प्रकाश से युक्त अक्षरधाम है। दिव्य तेज-ऐश्वर्य-प्रताप, बल कीर्ति संयुक्त स्वराट ऐसे दिव्य गुण से वहाँ महाराज विराजमान रहते हैं। इतना ही नहीं भगवान के चारो तरफ अनंत कोटि मुक्त बैठकर दर्शन करते रहते हैं। भगवान स्वामिनारायण अक्षरधाम तथा मुक्त ये तीनो सदा दिव्य हैं। यह त्रिपुटी जीव, माया, ईश्वर, ब्रह्म इन चारों से परे है। इस तरह मनुष्य को जब अक्षरधाम की प्राप्ति होती है तो वह दिव्य देह धारण करके परमात्मा की सेवा में रहता है। जब महाप्रलय होती है तब महामाया में लीन हो जाते हैं। महामाया अक्षर में लीन हो जाती है। इसके बाद धाम, मुक्त तथा भगवान ये तीनो दिव्य स्वरुप से रहते हैं। इसे अंतिम प्रलय समझना चाहिये। इस तरह जब चौदह लोक का विनाश होजाता है। तब भी अक्षरधाम का नाम नहीं होता वह अविनाशी है। इसलिये इस अक्षरधाम की प्राप्ति के लिये मनुष्य को सदा प्रयत्न करते रहना चाहिये।

•

श्रीहरि का चमत्कार

- सां.यो. कंचनबा (धांगध्रा)

आज के प्रभावशाली कलियुग के समय में मनुष्य अपने कर्तव्य को भूल गया है। सात्विक आहार लोग छोड़ रहे हैं। शुद्ध घर का भोजन त्याग कर बाहर का दूषित भोजन कर रहे हैं। इस प्रकार का अन्न स्वास्थ्य से तथा प्रभु से दूर करता है। मानवता का कार्य-ईश्वर का दर्शन संत समागम करना है, सभी इसका त्याग करके ऐश-आराम की तरफ बढ रहे हैं। इस अस्त व्यस्त वातावरण में भी सभी कारणों के कारण श्री स्वामिनारायण भगवान दया करके सभी जीवों पर कल्याण करने के लिये तथा भगवान में आस्था दृढ करने के लिये नियम, निश्चय तथा भक्ति मय जीवन बने इसके लिये अथक परिश्रम किया। यहां एक उदाहरण देते हैं।

बुंदेल कंख के धुंवा नामक गाँव में श्रीजी महाराज की आश्रिता महिलायें तथा पुरुष रहते थे। उस गाँव में सत्संग के लिये संत पधारे थे। इस गाँव में श्रीजी महाराज की आश्रिता सत्संगी फूलबाई थी। वे संतो के लिये रसोई तैयार की। संतो खूब प्रसन्न होकर फूलबाई के घर जाकर रसोई का प्रसाद ग्रहण करने के लिये हां किये, इसी बीच मधुभाई नामक एक ब्राह्मण भी जाकर निमंत्रण दिया। उस ब्राह्मण की श्रद्धा देखकर उसके यहां भी भोजन के लिये हाँ कर दिये। अब संत विचार करने लगे कि पहले वह महिला निमंत्रण दी है। ब्राह्मण तो पीछे से आया फिर भी ब्राह्मण धनी था, और अपने सत्संग का नहीं था, अप प्रचार करेगा इसके लिये संतो ने फूलबाई के यहाँ संदेश भेंजे की कल हम सभी का भोजन धनी ब्राह्मण के आग्रह पर उनके घर करना है। अतः आपके यहाँ दूसरे दिन तैयारी करियेगा। संयोगवश फूलबाई की शरीर उसी रात्रि में

छूट जाती है और अक्षरधाम को प्राप्त होती है। वहाँ भगवान स्वामिनारायण को अनंत मुक्तों के बीच में विराजमान देखा। सहजानंद महाराज ने फूलबाई से पूछा कि आप अपने मन में क्या संकल्प करती हैं ? क्या कराना बाकी रह गया । तब फूलबाईने कहा मेरे गांव में संत पधारे थे उन्हें भोजन कराना था कि आप लेने आगये, वही कार्य बाकी है । यह सुनते ही महाराज ने कहा यदि संतो को भोजन करना बाकी है तो तुरंत वापस जाओ । अपना कार्य करके तीसरे दिन वापस आजाना ।

वह बाई तुरंत उसी शरीर में आ गयी और सभी से महाराज की बात बताई कि महाराजने (संतो को भोजन कराना बाकी था इसलिये) वापस भेंज दिया । सभी यह बात सुनकर बड़े आश्चर्य में पड़ गये । दूसरे दिन संत भोजन के लिये आये । फूलबाई संतो की पूजा करके भोजन कराई । संतो के जाने के बाद बाई आंगन में चौकपुरी और दीपक जलाकर आसन पर बैठ गयी । सभी से कहने लगी कि मैं अब अक्षरधाम जा रही हूँ, किसी को साथ आना होतो तैयार हो जाओ । कोई तैयार नहीं हुआ । सभी के देखते ही फूलबाई अक्षरधाम के लिये प्रस्थान की । इस तरह श्रीजी महाराज फूलबाई को चमत्कार दिखाकर अपने अक्षरधाम में ले गये । अपने संप्रदाय में संतो का भी माहात्म्य अच्छा है । इसी तरह की हम सभी में निष्ठा बनी रहे ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना ।

•

प्रशंसा की बलिहारी

- सां.यो. अल्पाबहन गुरु शिल्पाबहन (गढडा)

भगवान स्वामिनारायण बड़े दयालुं है । सुख कारी एवं दुःखहारी हैं । वे वरदान दिये हैं कि जो अंत काल में मेरा स्मरण करेगा उसे हम स्वयं लेने आयेंगे । यह उसके लिये है जो भगवान की एक निष्ठा भक्ति करेगा । भगवान के भक्तों के साथ या संतो के साथ जो समागम करेगा उसका हम कल्याण अवश्य करेंगे । सच्चे अर्थ में भगवान का जो एकांतिक भक्त हो उसका सर्व बिधकल्याण होता है।

एक दिन दो संत सत्संग करते हुये बुरहानपुर पहुंचे वहाँ वापी नदी के किनारे एक धर्मशाला में रुके । गाँव के भक्त सुबह स्नान करने आये तो स्वामिनारायण के संतो का दर्शन करके आत्मिक शांति का अनुभव किये । लोग आपस में चर्चा करने लगे कि ये सच्चे अर्थ में भगवान के संत है । कुछ लोग संतो के पास आये, संतो से परिचय पूछे तो संतोने कहा कि हम स्वामिनारायण भगवानके संत है । वे भगवान बड़े दयालु हैं । जो उनका आश्रित होता है वह इस लोक में तथा पर लोक में सुखी होता है।

इसका कारण यह है कि वे अपने गुरु रामानंद स्वामी से वरदान में मांगा था कि जो मेरे आश्रित हो उन्हें सूई के नोक भर की पीडा़ हो या बिच्छू के डंक की पीड़ा हो तो वह पीड़ा मुझे मिले । वे गाँव के भक्त कहने लगे कि हमें उन भगवान के आश्रित होना चाहते हैं । संतोने कहा आप सभी स्वामिनारायण मंत्र का जप करते रहना, उन्हीं की शरणागति करना-इससे पूर्व के पाप नष्ट होजायेंगे जीवन सुखी होजायेगा । वे सभी भगवान के आश्रित होकर भगवान की भजन करने लगे । इनमें से दो भाई जिसमें बड़े भाई शोभाराम को यह अच्छा नहीं लगा । वे कहने लगे यह धर्म तुम लोग क्यो स्वीकार किये । स्वामिनारायण भगवान की वह निंदा करने लगा । सत्संग छोड़ाने के लिये नाना उपाय किया लेकिन दोनो छोटे भाई सत्संग नहीं छोड़े ।

दोनो भाईयों ने कहा एक बार आप संत समागम कीजिये आपके मन की शंका निकल जायेगी । हुआ भी एक दिन ऐसा वे अकेले संतो के पास गये और संतो की वाणी सुनकर प्रभावित होकर स्वामिनारायण के सत्संगी होगये । एकदिन भगवान स्वामिनारायण ने शोभाराम का भ्रम दूर करने के लिये यमलोक भी लेगये, उसके बाद से वे एक निष्ठ स्वामिनारायण के भक्त हो गये और अंत में महाराज उन्हें अक्षरधाम ले गये।

भक्तजन आप विचार कर सकते हैं कि शोभाराम के साथ दो अन्य भाई भगवान की निष्ठावाले हुये और इस लोक तथा परलोक के सुख को प्राप्त किये । यह संत समागम का फल है । संत समागम न करने से अवनति होती है । कभी भी संतो में अवगुण नहीं देखना चाहिये ।

•

.... प्रश्नपेटी ....

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर, जेतलपुर)

प्र.१ मन दीधुं होय ने न दीधुं होय तेना शा लक्षण छे ? वचनामृत के आधार पर मुक्तानदं स्वामी के प्रश्न का उत्तर क्या है ?

प्र.२ गांव पीठवाजल छोडकर देवशी भगत आंबा गाँव में रहने आये लेकिन उस गाँव में मंदिर नहीं था तो मंदिर करने के लिये देवशी भगत क्या करते हैं ?

प्र.३ स.गु. मुक्तानंद स्वामी का एकपद है जिसकी कुछ कड़ी नीचे प्रस्तुत है ''राजबी दुःखीया रंकबी दुःखीया, जूठा तन अहंकार में......, ज्ञान विना दुःख पावत दुनिया, माया घोर अंधार में .... इन पदो में मुक्तानंद स्वामी दुःख का मुख्य क्या कारण बताये हैं ?''

प्र.४ गायकवाड सयाजीराव महाराजने स.गु. मुक्तानंद स्वामी को पूछा कि ''मेरे पास राज्य है फिर भी प्रजा आपकी आज्ञा मानती है मेरी आज्ञा नहीं मानती । मांस, मदिरा, अफीम इत्यादि को छोड़ाने के लिये कडक नियम तथा पुलिस की कडक व्यवस्था है फिर भी कोई मानता नहीं है । आप पुलिस की व्यस्था विना आज्ञा मात्र से नियम में सभी को रखते हैं । आपके पास जितने प्रेम से लोग आते हैं उतने प्रेम से मेरे पास लोग नहीं आते हैं. आपके पास कौन सी वशीकरण विद्या है ? मुक्तानंद स्वामी के पास कौन सी वशीकरण विद्या थी ?''

प्र.५ वि.स. १८८५ आश्विन कृष्ण १३ के शुभ दिन शतानंद मुनिने ११ श्लोक से श्रीहरि की स्तुति की थी उसका प्रथम श्लोक क्या था ?

प्र.६ वेशलीधो वैराग्यनो, देश रही गयो दूरजी, अपर नो अछो बन्यो, मांही मोह भरपूरजी.... निष्कुलानंद स्वामी रचित इस कडी की प्रथम कड़ी क्या है ?

प्र.७ जीव का क्या लक्षण है ? शिक्षापत्री के अनुसार व्याख्या करो ?

जनवरि मास २०१० महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर

(१) १. मामैयो, २. हाथीयो, ३. रामो (२) स.गु. शतानन्द स्वामी (३) तारा स्वामिनारायण आवतीकाले सूर्योदय पहेला नहीं आवे तो सूर्य उगशे एटले तारा ढींचण भांगी नाखीश (४) स.गु. गुणातीतानंद स्वामी (५) स.गु. दयानंद स्वामी (६) चंद्रमा, ब्रह्मा, वासुदेव, रुद्र (७) स.गु. आधारानंद स्वामी

१. कैलाशबहन विष्णुभाई पटेल - नांदोल
२. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - नांदोल
३. शारदाबहन कांतिभाई पटेल - नांदोल
४. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी - अमदावाद
५. सां.यो. रेखाबा, अस्मिताबा, मंजूबा, भारतीबा - कालुपुर मंदिर हवेली
६. सां.यो. रंजनबा, रसीलाबा - बालासिनोर
७. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - रतनपर
८. सां.यो. कोकिलाबा, उषाबा - सुरेन्द्रनगर
९. हसुबहन के. ठक्कर - अमदावाद
१०. वीणाबहन आर. भावसार - अमदावाद
११. अरविंदाबहन एन. भावसार - चांदलोडीया
१२. सां.यो. शिल्पाबा शीतलबा - कालुपुर मंदिर हवेली
१३. विठ्ठलपरा अमरसिंहभाई वी. - नवसारी
१४. स.गु.शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी - जमीयतपुरा
१५. विनोदभाई पी. पटेल - वहेलाल
१६. अमृतलाल के. मोदी - सोजा
१७. गोरधनभाई शंकरलाल पटेल - सोजा
१८. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
१९. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगाँव
२०. भोरणीया नथुभाई भगवानजी - घुंट-मोरबी
२१. ज्योत्सनाबहन राजूभाई - आनंदपुरा कड़ी
२२. गंगाबहन भक्तिभाई पटेल - झुलासण
२३. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल - राणीप
२४. स.गु. शा.प्रेमप्रकाशदास - वाली, जेतलपुरवाडी
२५. शा. भक्तिदर्शन स्वामी - लावडी, जेतलपुरवाडी
२६. सां.यो. बहने - जेतलपुर स्वा. मंदिर
२७. सेजल बाबूभाई - बापूनगर
२८. वर्षाबहन सोनी - मेमनगर
२९. टांक चंद्रिकाबहन - जीरागढ
३०. काचा कौशिका - जीरागढ
३१. डाभी मफाजी सरदारजी - डांगरवा
३२. साकरबहन नटवरभाई पटेल - नांदोल
३३. सां.यो. अल्पाबहन गुरु शिल्पाबहन - गढपुर
३४. खंधडिया भावनाबहन कमलेशकुमार - मोरबी

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में तथा पूजनीय संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की पांच पीढ़ी से सेवा करनेवाले पार्षद श्री महोबतसिंहजी भगत ता. २-१-२०१० के दिन अक्षरनिवासी हुए उनके पुण्य स्मरण हेतु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मवंशी की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन से तथा पार्षद महादेव भगत गुरु महोबतसिंह भगत तथा पार्षद वनराज भगत के गुरु सामल भगत के संकल्प से पू. भगतजी के हितैषी हरिभक्तो की तरफ से ता. १८-१-२०१० से ता. २२-१-२०१० तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) तथा शास्त्री स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा महंत) तथा सहिंतापाठ के वक्ता शास्त्री स्वामी भक्तिवल्लभदासजी थे। प्रथम तथा अंतिम दिन ठाकुरजी को भोग तथा प्रसाद लगाया गया। धर्मकुल तथा संतो के लिए रसोई-भोजन कार्यक्रम किया गया। पूर्णाहुति के दिन शा. स्वामी निर्गुणदासजी, अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी आदि संतोने उनके गुणो को याद करके उनकी सेवा की प्रशंसा की। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने भगतजी के ''दरबार'' के कई प्रसंगो को याद करके उनकी धर्मकुल के प्रति सेवा निष्ठा की प्रशंसा की तथा उनके शिष्य महादेव भगत कोआशीर्वाद दिये। – अजीतसिंह दरबार

ता. १५-१-२०१० के सूर्यग्रहण के निमित्त अहमदाबाद मंदिर में कीर्तन संध्या कार्यक्रम

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद-आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से कोठारी पार्षद दिगंबर भगत के मार्गदर्शन में सूर्य ग्रहण के दिन सभा मंडप में संप्रदाय के सुप्रसिद्ध गायक कलाकारश्री जयेशभाई सोनी तथा मंडलने भगवान संबंधी नंदसंतो की भजन धून-कीर्तन का कार्यक्रम किया था। – मुनि स्वामी

नारायणघाट मंदिर से नरनारायणदेव के दर्शन केलिये पदयात्रा

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर धनुर्मास के निमित्त पौष कृष्ण पक्ष-११ एकादशी को ता. १०-१-२०१० प्रातः ५-१५ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने ठाकुरजी की मंगला आरती करके संत हरिभक्तों के विशाल समूह के साथ श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पदयात्रा का शुभारंभ किया था।

इस पदयात्रा में राणीप मंदिर के रजत जयंती के उपलक्ष्य में तथा वाडज मंदिर के ५० वें वर्ष के उपलक्ष्य में वहां के हरिभक्त भी हजारो की संख्या में पदयात्रा में जुड़े थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ नारणघाट के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, छोटे पी.पी. स्वामी सहित १२ जितने संतो ने तथा ४००० हरिभक्तों ने धून-कीर्तन करते हुए श्री नरनारायणदेव के शृगार आरती के दर्शन के बाद पदयात्रा पूर्ण की थी। – शा. अभयप्रकाशदास

दंढाव्य प्रदेश के वडु गाँव में श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने स्नेह सत्संग संमेलन का आयोजन किया

श्री नरनारायणदेव गादी देश के गाँव वडुं के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्नता से ता. १०-१-२०१० के रविवार को प्रथमवार युवा स्नेह सत्संग मिलन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में श्री नरनारायण वाड़ी में सुबह ८-०० से १२-०० तक आयोजन किया गया था। जिसमें उत्तर गुजरात के गाँव गाँव से बड़ी संख्या में युवानगण पधारे थे। स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने धर्मकुल परंपरा तथा स्वरुपनिष्ठा के विषय में कृतनिश्चयी होकर सेवा-स्मरण करने का अनुरोधकिया। उसके बाद स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (असारवा गुरुकुल)ने श्रीजी महाराज की आज्ञानुसार देव का दशांश वीशांश धर्मादा प्रदान करने का मुख्य सिद्धांत को समझाया था। तथा स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर गुरुकुल) ने नियम निश्चिय, पक्ष तथा आज्ञा-उपासना शास्त्र के सिद्धान्त के अनुसार समझाया। अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजीने वडुं गाँव की धरती श्रीजीके चरणांकित होने से धन्य हुई थी और नित्य धन्य हो रही है उस बात को समर्थन देकर देश-विदेश में स्थापित वडुं के हरिभक्तों की तन, मन, धन से सेवा की प्रशंसा करके युवानों में सेवा-संस्कार के साथ सत्संग की महिमा कभी कम न हो ऐसी प्रेरणादायी बात समझाई थी।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पधारे हुए सभी युवानों

के उत्साह को बढाया तथा अपनी अमृतवाणी द्वारा मन को सावधान करने हेतु मर्कट (बंदर) का उदाहरण देकर मन की दृढता कैसे हो तो पवित्र सत्संग के सिद्धान्त को जीवन में उतारने से तथा इन्ही सिद्धांतो द्वारा ही सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान को प्रसन्न करके अपना जन्म सार्थक कर सकते है । इस युवा शिबिर में स.गु. शास्त्री स्वा. विश्वस्वरुपदासजी गुरु स.गु. स्वा. सूर्यप्रकाशदासजीने बहुत प्रशंसनीय सेवा की थी । सभा का संचालन छोटे पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंत स्वामी तथा स.गु. ब्र. स्वा. पुजारी राजेश्वरानंदजी (श्री नरनारायणदेव के पुजारी तथा कोठरी जे.के. स्वामी तथा अन्य संत श्री नरनारायणदेव युवक मंडल वडुं के युवान इस शिबिर में जुड़ गये थे ।

– शास्त्री अभिषेकप्रसाददास, वडनगर

श्री स्वामिनारायण मंदरि बावोल

बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर में रहकर श्रीहरि की सेवा में अखंड परायण सांख्ययोगी सूरजबा के सेवक सांख्ययोगी झवरबा की तरफ से ता. ८-१-२०१० से ता. १२-१-२०१० तक "श्रीमद् सत्संगिभूषण" पंचान्ह पारायण का मंगल आयोजन किया गया था । जिसके वक्तापद पर वड़नगर गुरुकुल के विद्वान स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजीने व्यासासन पर बिराजकर कथामृत का रसपान कराया था । इस शुभ प्रसंग पर सांख्ययोगी सूरजबा तथा सांख्ययोगी झवरबा के आमंत्रण को सहर्ष स्वीकार करके अ.सौ. पूज्य गादीवालाश्री तथा अ.सौ.पू. बड़ी गादीवालाश्री भी पधारी थी ।.ता. ११-१-२०१० के सोमवार को प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारकर वावेल गाँव के समस्त सत्संगी हरिभक्तो तथा धर्म प्रेमीजनो को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये । इस प्रसंग पर ता. ८-१-२०१० के दिन अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजीने दीप प्रागट्य करके कथा का शुभारंभ करवाया था । अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामीने भी अपनी वाणी द्वारा वावोल के सत्संग समाज की सेवा-धर्म प्रवृत्ति की प्रशंसा की थी । इस मंगल प्रसंग पर यजमानश्री के आमंत्रण को सहर्ष स्वीकार करके ता. १२-१ २०१० के मंगलवार को पूर्णाहुति प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे । उनका भव्य स्वागत गाँव के राजमार्ग पर नगरयात्रा के रुप में किया गया था । उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने बहनो के तथा भाईयों के मंदिर में पधारकर श्री ठाकुरजी की आरती अपने वरद् हाथों से उतारकर कथा मंडप में पधारे थे । उसके बाद कथा की पूर्णाहुति की आरती पू. महाराजश्रीने ग्रंथ वक्ताश्री का पूजन करके की थी । कथा के यजमान सां.यो. झवरबा की तरफ से अ.नि. पटेल कालीदास चतुरभाई तथा अ.नि. पटेल लालभाई चतुरदास तथा अ.नि. पटेल पोपटलाल कालीदास की तरफ से चीमनभाई कालीदास पटेल तथा कान्तिभाई कालीदास पटेल तथा महेन्द्रभाई कालीदास पटेल तथा केशाभाई कालीदास पटेल तथा रमणभाई कालीदास पटेल आदि हरिभक्तों ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का फूलहार से स्वागत पूजन-आरती करके अलौकिक लाभ लिया था । इस सभा में शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने प्रसादी की धरती आदरज गाँव में नूतन मंदिर बनवाने के लिये हरिभक्तों को प्रेरणा देने के कारण वावोल तथा आस-पास के गाँव के लोगों ने बहुत योगदान दिया था । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने वावोल गाँव के सत्संग की प्रशंसा करके दिव्य आशीर्वाद प्रदान किया । सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी तथा स.गु.शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजीने कथा-वार्ता करके सुंदर संचालन किया था ।

– शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी

वड्नगर के प्रसादी के नागघर पर खीचड़ी कढी का उत्सव मनाया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वा. हरिसेवादासजी की प्रेरणा से मंदिर में धनुर्मास के दिन प्रातः ६-३० से ७-०० तक अखंड धून तथा प्रातःप्रभातफेरी का आयोजन किया गया था । जिस में शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी समग्र एक महीने तक जुड़े थे । साथ में पूजारी शा. अभिषेकप्रसाददासजीने धनुर्मास दरम्यान श्री घनश्याम महाराज का प्रत्येक दिन सुंदर श्रृंगार सजाकर दर्शन तथा कथावार्ता का लाभ दिया था । ता. १९-१-२०१० के मंगलवार को जहाँ श्रीहरि अखंड ढाई महीने तक रुके थे ऐसे प्रसादी के नागधरा की पवित्र जगह पर शाम के ३-०० से ६-०० तक सत्संग सभा तथा प्रसाद में खीचड़ी कढ़ी का उत्सव का आयोजन किया गया था । श्री स्वामिनारायण भगवानने अलौकिक चरित्रों के साथ धर्मवंशी गुरु परंपरा की महिमा शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजीने समझाया था । इस प्रसंग पर प.भ. सोमाभाई डी. मोदी, चीफ ओफीसर श्री ब्रह्मभट्ट साहब, श्री राजुभाई मोदी, श्री अरविंदभाई पटेल पारुल गेसवाला आदि की संप्रदाय के हरिभक्तों ने श्री नवीनभाई मोदी, श्री नटुभाई भावसार, श्री कनैयालाल भावसार द्वारा स्वागत करके प्रशंसा क थी । – पटेल कालीदास जयंतीलाल

कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बालस्वरुप कष्टभंजनदेव के सानिध्य में धनुर्मास की धून-उत्सव धूमधाम से मनाया गया । ता. २-१-२०१० के दिन प.पू. महाराजश्री आशीर्वाद प्रदान करने पधारे थे । खीचड़ी महोत्सव में हजारो भाविकोने लाभ लिया था । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने पधारकर बहनों को दर्शन का लाभ दिया था । पौषकृष्ण पक्ष११ एकादशी को कांकरिया मंदिर से अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पदयात्रा का आयोजन किया गया था। जिस में संतो के साथ हजारों हरिभक्त जुडे थे। मकर संक्रांति को खीचड़ी उत्सव में हजारों हरिभक्त जुडे थे । इस प्रसंग पर स्वामी गुरुप्रसाददासजी आनदं स्वामी, शा. यज्ञप्रकाशदासजी पुजारी देवस्वामी आदि संतो की प्रेरणा से उत्सव धूमधाम से मनाया गया। -गौरांगभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडीया

ता. १६-१-२०१० के दिन रात में ८-०० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । यहाँ के हरिभक्तो तथा युवक मंडलने प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प, श्री स्वामिनारायण म्युझियम के निर्माण में तन, मन तथा धन से सेवा किये परंतु श्रीहरि को प्रिय ऐसा शतानंदमुनि कृत जनमंगल स्तोत्र अथवा नामावलि हर शनिवार को कुल ११ पाठ श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उद्घाटन तक करने का नियम लिया है । प.पू. बडे महाराजश्री ने स्वयं अपने अलौकिक मुख से जनमंगल पाठ का शुभारंभ करवाकर हरिभक्तों को उत्साहित किया था । इस प्रसंग के यजमान श्री सोमाभाई नरसीभाई तथा समस्त हरिभक्तों को प.पू. बड़े महाराजश्री आशीर्वाद प्रदान किये थे । -प्रविणभाई पटेल

श्रीहरि के प्रसादी के मोटेरा में श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मवंशी के आशीर्वाद से शा. छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के सोमेस्वर महादेव के प्रांगण में ता. २४-१२-०९ से ता. २८-१२-०९ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण का आयोजन किया गया था ।

प.भ. धर्मेशभाई कांतिभाई पटेलने पितृऋण तथा प्रथम पुण्यतिथि के निमित्त तथा अपने माताजी गं.स्व. कमलाबहन कांतिभाई पटेल के संकल्प से श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण शास्त्री स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के मधुर कंठ से आयोजित की थी । हजारों भक्तजनोने कथा श्रवण का लाभ लिया था । पारायण की पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । तथा समस्त ग्रामजनों तथा यजमान परिवार को आशीर्वाद देकर बहुत प्रसन्न किये । इस प्रसंग पर दूर-दूर से संत गण, अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, जेतलपुर धाम के महंत स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, नारणघाट के महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी तथा कांकरिया के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी आदि संतोने पधारकर सुंदर लाभ दिया था । बहनों का आमंत्रण स्वीकार करके प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने पधारकर बहनों को अलौकिक लाभ दिया था । रात्री भजन संध्या में श्यामल, सौमिल, मुनशी ने कीर्तन भक्ति करके सभी को आनंदित किया था ।

ता. २८-१२-०९ को पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । समस्त सभा को आशीर्वाद देकर बहुत प्रसन्न कर दिया था । सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ने संभाला था । -व्रजभूषणदास

श्रीहरि के प्रसादी के मोटेरा गाँव में रात्री पारायण का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्रीहरि के दिव्य चरणों से अंकित मोटेरा गाँव में श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य नवान्ह (रात्री) पारायण स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर ता. २६-१२-०९ से ता. ३-१-२०१० तक धूमधाम से संपन्न हुई । हरिभक्तोंने तथा धर्मप्रेमीजनोने बड़ी संख्या में कथा का दिव्य लाभ लिया था ।

दिव्य शाकोत्सव तथा कथा की पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी । उसके बाद मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में पधारे थे । जिस में मुख्य यजमान प.भ. द्वारकादास ईश्वरभाई पटेल तथा श्री भरतभाई प्रभुदास पटेल प.पू. महाराजश्री की आरती उतारकर पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे । अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजीने बहुत भावात्मक प्रवचन किया था । अंत में प.पू. महाराजश्री सभी को दिव्य आशीर्वाद दिये थे । शाकोत्सव में हजारो हरिभक्त खड़े थे । दोनो उत्सवमें श्री नरनारायणदेव युवक मडंलने प्रेरणात्मक सेवा की थी । सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यरुपदासजीने (कोटेस्वर) किया था ।

- शा. अभयप्रकाशदास

गोमतीपुर मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने धनुर्मास में धून का सुंदर आयोजन किया था। गोमतीपुर के प्रत्येक भाई-बहनो ने धून में लाभ लिया था। - मुकेशभाई

नरोड़ा आदिश्वरनगर मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धनुर्मास के धून में हरिभक्तोंने दिव्य लाभ लिया था। ता. २६-१२-०९ के रविवार को शाकोत्सव प्रसंग पर कालुपुर, नारणघाट, वहेलाल तथा निकोल मंदिर के संतो ने श्रीहरि की महिमा के साथ शाकोत्सव की महिमा समझाया था। युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। - नरसीभाई मास्तर

डांगरवा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा बीलीया तथा वाली (राजस्थान) के संतो की प्रेरणा से यहाँ बिराजमान श्री कष्टभंजनदेव के शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर पाटीदारो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २५-११-०९ से ता. २९-११-०९ तक सुंदर कथा बीलीया के शास्त्री स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी। पूर्णाहुति के प्रसंग पर धामोधाम से संतगण पधारे थे। प.पू. बड़े महाराजश्री पधारकर आशीर्वाद देकर खूब प्रसन्न हुये। अहमदाबाद में बसे हुए डांगरवा के हरिभक्तों ने अहमदाबाद से डांगरवा पदयात्रा का आयोजन किया था। इग्यारह कुंडी यज्ञ भी धूमधाम से संपन्न हुआ था।

- छनालाल पटेल

कालीयाणा

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता. ४-१-२०१० को जेतलपुर से शा. हरिॐप्रकाशदासजी, श्याम स्वामी तथा वी.पी. स्वामीने सत्संग सभा में कथावार्ता का अलौकिक लाभ दिया था। प.भ. डाह्याभाई बूटीया, प.भ. भीखुभाई मोरी आदि अग्रगण्य हरिभक्तों की सेवा प्रशंसनीय थी। - घनश्यामभाई

साणंद के पास के माणकोल गाँव में प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे

नल सरोवर के किनारे छोटे सा गाँव माणकोल में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर गाँव के पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा शियाल गाँव के प.भ. घनश्यामभाई आदि हरिभक्तों के पुरुषार्थ तथा आमंत्रण से ता. ८-१-२०१० को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। प्रथम मंदिर में पधारकर ठाकुरजीकी आरती उतारकर सभा में पधारे थे। सभा में नरनारायणदेव तथा आचार्य महाराजश्री के महिमा का गुणगान पू. पी.पी. स्वामी, छोटे पी.पी. आदि संतोने किया था। सभा में कई नये मुमुक्षुओं को प.पू. महाराजश्री ने कंठी बांधकर गुरु मंत्र देकर आशीर्वाद दिये थे। श्री कालुभाई अजुभाई सोलंकी तथा उनके पुत्र हसमुखभाई तथा अनीलभाई के तथा अन्य हरिभक्तों के यहाँ पधरामणी की थी। श्री अरविंदभाई कानजीभाई (शियालवाले) की सेवा प्रेरणात्मक थी। प.पू. महाराजश्री समस्त गाँव के भाविक भक्तो पर बहुत प्रसन्न हुये थे। इस प्रसंग पर पू. श्याम स्वामी, पू. ब्र. राजेश्वरानंदजी, जे.के. स्वामी, मुनि स्वामी जेतलपुर के वी.पी. स्वामी आदि संत पधारे थे। - चिमनभाई पटेल, भातवाले

अपने मंदिर में मनाये गये भव्य शाकोत्सव
नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर

में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स.गु. स्वामी देवप्रकाशदाजी तथा महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव की प्राकोट्य भूमि साबरमती के किनारे ता. २-१-२०१० के शनिवार की शाम को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से शब्जी का अलौकिक वघार करके शाकोत्सव मनाया। जिसके मुख्य यजमान पद का लाभ प.भ. साकलचंदभाई छगनदास पटेल ह. जयंतीभाई, प्रकाशभाई तथा दशरथभाई (सुपर मारबल विहारवाले) तथा सह यजमान प.भ. केशुभाई कड़जीभाई चौहाण ह. विजय, कल्पेश तथा रोनक (वलसाड़) आदि परिवारने लाभ लिया था। शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने शाकोत्सव के महिमा की कथा तथा कीर्तन भक्ति का आयोजन किया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, संप्रदाय के विद्वान कथाकार पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, वड़नगर के शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी, नारणपुरा महंत शा. स्वा. श्रीजी प्रकाशदासजी, कांकरिया के महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी तथा आनंद स्वामी आदि संतोने अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया था। हजारो की संख्या में हरिभक्तोने दर्शन करके प.पू. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद लेकर प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किया था। - शा. अभयप्रकाशदास

ईडर श्री स्वामिनारायण मंदिर

ईडर सर्वोपरि श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराजके सानिध्य

में ता. ९-१-२०१० को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज के वरद् हाथों से शाकोत्सव का दिव्य वघार करवाया गया। सभा में पधारे धामोधाम से संतगण, महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी तथा यजमान परिवारने प.पू. महाराजश्री का स्वागत फूलहार से किया। सभा संचालन शा.स्वा. हरिजीवनदासने करते हुए कहा की प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से समस्त साबरकांठा में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के शिबिर का आयोजन ता. २१-१-२०१० को किया गया है।

- साधु सत्यसंकल्पदास

हर्षद कोलोनी मंदिर (बापूनगर)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २४-१-२०१० रविवार को भव्य शाकोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न हुआ था। ८००० जितने हरिभक्तों को प.पू. बड़े महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद दिया।

- गोरधनभाई सीतापरा

घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर आयोजित नारणपुरा प्रगतिनगर कोम्युनीटी होल में ता. ६-१-२०१० के दिन शाम को प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव मनाया गया। यजमान प.भ. गांडाभाई कालीदास पटेल ने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।

प्रासंगिक सभा में पू. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद) महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, छोटे पी.पी. स्वामी (नारणघाट), महंत शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (नारणपुरा), शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), स्वामी जगतप्रकादसाजी तथा स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी (जयदेवपुरा) आदि संत प्रेरक प्रवचन किये। अंत में सभा को प.पू. लालजी महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद दिया। २००० जितने भक्तजन प्रसाद प्राप्त किये थे।

- शैलेषभाई पटेल

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से धनुर्मास की धून धूमधाम से मनाई गयी थी। इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकी कथा का पान शास्त्री व्रजवल्लभदाजीने करवाया था। ता. २१-१२-०९ के रविवार को भव्य शाकोत्सव मनाया गया। महंत स्वामी तथा कोठारी तथा हरिभक्त गण प्रेरणारुप बने थे।

प्रांतिज श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी की प्रेरणा से ता. २५-१२-०९ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया। गं.स्व. कोकीलाबहन रमेशचंद्र मोदी परिवार अ.नि. केशवलाल नानचंद मोदी परिवार की तरफ से अ.नि. अंबालाल नारायणदास के कार्य पर शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। गवैया स्वामी के संत हरिजीवन स्वामी तथा बलदेव स्वामीने शाकोत्सव के कीर्तनो को सुंदर राग में गाया था। आसपास के १० जितने गाँव के २००० भाविकोने दिव्य लाभ लिया था।

- कोठारी हरिभाई मोदी

कालोल श्रीनगर मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २९-१२-२००९ के दिन श्रीनगर मंदिर में शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। जिस में जसु भगत, पुजारी हितेन्द्र तथा सांख्ययोगी बहनोंने सेवा की थी।

धार्माभाई पटेल

करजीसण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प्रसादी के वाघरोडा तलाब के पास ता. २०-१२-०९ को भव्य शाकोत्सव पार्षद जसु भगत की प्रेरणा से अरविंदभाई गांगभाई पटेल तथा घनश्यामभाई की तरफ से मनाया गया। आसपास के १० जितने गांव के भाविको ने शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्यता अनुभव किया था।

- पटेल रणछोडभाई

धनसुरा मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ४-१-२०१० के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव संपन्न हुआ। शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी की प्रेरणा से प.भ. मनहरभाई हीराभाई पटेल के परिवारने यजमान पद का लाभ लिया था। .पू. महाराजश्री के साथ ब्र. पू. राजेश्वरानदंजी, नारणघाट के महंत पी.पी. स्वामी, जे. के. स्वामी, ईड़र महंत स्वामी, हिंमतनगर महंतश्री तथा विश्ववल्लभ स्वामी आदि पधारे हुए संतोने अनुकरणीय प्रवचन किये। इस प्रसंग में साधु विश्ववल्लभदास, ईडर के सत्य संकल्पदास, सुखनंदनदास, श्रीजी स्वामी तथा परेश भगत सेवा में जुड़े थे।

- सोमाभाई पटेल

देलवाडा मंदिर में शाकोत्सव

देलवाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी की प्रेरणा से ता. ३-१-२०१० को श्रीहरि के स्वरुप समान प.पू. बड़े

महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव मनाया गया। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री बड़ी संख्या में पधारे हुये हरिभक्तों को दिव्य आशीर्वाद दिये। - नारणभाई वी. पटेल

कपडवंज मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ३-१-२०१० को समूह महापूजा तथा शाकोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ। जिसमें शा. स्वा. विश्वस्वरुपदासने कथा वार्ता तथा महापूजा की विधिकरवायी थी। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा लालभाई सेवा में उपस्थित थे। - कुलदीप भगत

वक्तापुर मंदिर (प्रांतिज)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणारुप मार्गदर्शन से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ९-१-२०१० को दिव्य शाकोत्सव मनाया गया।

इस प्रसंग पर नारणघाट से शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा शा. अभयप्रकाशदासजीने ईष्टदेव श्रीजी महाराज की तथा शाकोत्सव की महिमा समझायी थी। - कोठारीश्री

माधवगढ मंदिर (प्रांतिज)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ६-१-२०१० के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया। इस प्रसंग पर छोटे पी.पी. स्वामी (नारणघाट महंत) शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी, प्रांतिज के महंत स्वामी श्रीजीस्वरुप स्वामी तथा सुखनंदनदास ने हरिभक्तों को कथावार्ता करते हुए शाकोत्सव की महिमा समझायी थी। - कोठारी चिमनभाई

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

मूली में वसंत पंचमी का उत्सव मनाया गया

मूली श्री स्वामिनारायण मदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में वसंत पंमची का उत्सव धूमधाम से मनाया गया।

प्रातः ६-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक वेद विधिपूर्वक धूमधाम से संपन्न हुआ।

प्रासंगिक सभा में संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. बड़े महाराजश्रीने सचोट दृष्टांत देकर झालावाड के हरिभक्तों पर प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे। दोपहर १२-०० बजे कई वर्ष के बाद रंगोत्सव खेलकर अपने आश्रितों को रंग से भिगो दिया। इस उत्सव में जनमेदनी की संख्या ५०,००० से भी अधिक थी।

यहाँ के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी के संत मंडलने उत्सव की सुंदर व्यवस्था की थी।

श्री राधाकृष्णदेव के पुजारी जयप्रकाशदासजीने पाटोत्सव अभिषेक का सुंदर आयोजन किया था। - साधु प्रेमस्वरुपदास

सुरेन्द्रनगर मंदिर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

मूली श्री राधाकृष्णदेव के सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ३-१-२०१० के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्व मनाया गया।

इस प्रसंग पर सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, ध्रांगध्रा के राम स्वामी, नारायणपुरा महंत श्रीजी स्वामी, सत्यसंकल्पदास, विष्णु स्वामी, भक्ति हरि स्वामी, श्रीजी स्वामी (हलवद) अहमदाबाद से राजु स्वामी, मूली से सूर्यप्रकाश स्वामी, रतनपर से के.पी. स्वामी आदि धामोधाम से संतगण पधारे थे। विद्वान संतोने शाकोत्सव के साथ झालावाड के सत्संग की प्रशंसा की थी। और कहा कि भगवान के पुत्र स्वयं जिस शब्जी का वघार करे तथा उसका प्रसाद जो ग्रहण करता है उसका भाग्य बदलजाता है।

पू. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से समग्र प्रसंग धूमधाम से मनाया गया। पू. शांतिप्रकाश स्वामी, पुजारी भक्ति स्वामी तथा कनु भगत की सेवा प्रशंसनीय थी।

शाकोत्सव की अन्य सेवा में भी प.भ. कांतिभाई जोईताराम पटेल अमहदाबाद, नवीनभाई मांडलीया मोरबी, सुरेन्द्रनगर के मनोजभाई परमार, भरतभाई पटेल राजकोट वल्लभभाई सुरेन्द्रनगर तथा पिनाकीनभाई तथा महेन्द्रभाई पटेल सुरेन्द्रनगर आदि अनेक हरिभक्तोंने सेवा की। - झाला शैलेन्द्रसिंह

चूडा गाँव के भाईयों तथा बहनों के मदिर में पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आर्शीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजीकी प्रेरणा

से भाईओं तथा बहनों के मंदिर में ता. ७-१-२०१० के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से धूमधाम से पाटोत्सव-अन्नकूट तथा शाकोत्सव मनाया गया था।

सुरेन्द्रनगर मंदिर से स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने बहुत ही उपदेशात्मक तथा प्रसंगोचित वात करके आशीर्वाद दिया। शाकोत्सव की सेवा में कोठारी सोनी थे। शाकोत्सव की सेवा में कोठारी घनश्यामभाई, डॉ. भरतभाई खेरडीया तथा राजुभाई सोनी थे। - झाला शैलेन्द्रसिंह

अरवीयाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में (बहनों का) पाटोत्सव मनाया गया

मूली श्री राधाकृष्णदेव के पाटड़ी तालुका के अखीयाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) (जो मूली के महान पूजनीय संत श्री हरिनारायणदाजी स्वामी का जन्म स्थल है) में ता. ९-१२-०९ को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। समग्र उत्सव स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी (सु.नगर) की प्रेरणा से संपन्न हुआ। ध्रांगध्रा के राम स्वामी तथा मूली से शा. सत्यसंकल्पदासजीने उत्सव की महिमा समझायी थी। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किये। समग्र सभा संचालन स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने किया था।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

देवीपुरा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का खात मुहूर्त

मूली श्री राधाकृष्णदेव के चराड़वा के पास में स्थित देवीपुरा गाँव में मुमुक्षुओं की प्रार्थना को ध्यान में रखकर नूतन भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर निर्माण हेतु जमीन संपादन करके भूमि पूजन के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। उनके वरद् हाथो से भूमि पूजन तथा शाकोत्सव मनाया गया। इस प्रसंग पर अहमदाबाद के महंत स.गु. शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी, हलवद से श्रीजी स्वामी, वी.पी. स्वामी आदि संतोने प्रेरणादायी प्रवचन किया था। जिसमें ७ से ८ हजार हरिभक्तोंने लाभ लिया था। अंत में सभी हरिभक्तों को प.पू. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद प्रदान किये। स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से देवीपुरा तथा चराडवा के युवानो ने सेवा प्रदान की थी।

-श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, चराडवा

जेतपुर-मच्छु गाँव में पाटोत्सव मनाया गया

मूली श्री राधाकृष्णदेव के मच्छु श्री स्वामिनारायण मंदिर के चौथे पाटोत्सव के प्रसंग पर शाकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आरती करके शाकोत्सव का दिव्य वघार किया था।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा मूली के श्रीजी स्वामी आदि संतोने प्रवचन किये। समग्र सभासंचालन सुरेन्द्रनगर के स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने किया था।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, जेतपुर

लींबडी श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से धनुर्मास में धून आदि कार्यक्रम श्री घनश्याम महाराज के समक्ष संपन्न हुआ।

- साधु वंदनप्रकाशदास

ध्रांगध्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर (घांचीवाड)

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री के आशीर्वाद-आज्ञा से सांख्ययोगी कंचनबा, सां. हिराबा, सां. भगवतीबा की प्रेरणा से घांचीवाड श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा श्रीहरि के प्रसादी के जोगासर तालाब के किनारे भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

- जयश्री एस. झिंझुवाडीया

विदेश सत्संग समाचार

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में १२ दिसम्बर एकादशी को सभा में प.पू. बिन्दुराजा, श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार पधारे थे। इस प्रसंग पर कीलवलेन्ड से शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी, शा. हरिनंदनदास तथा शिकागो से जे.पी. स्वामी पधारे थे। संतो ने एकादशी का सुंदर माहात्म्य समझाया था। - प्रविणभाई

टोरोन्टो केनेडा मंदिर में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ३-

१-२०१० शाकोत्सव मनाया गया । स्वयं सेवक बहनोने बाजरी की रोटी तथा शाक बनाया था । यजमान परिवारने सुंदर लाभ लिया था । शा. स्वा. सत्यस्वरुपदासजीने भगवान का धर्मकुल तथा शाकोत्सव का माहात्म्य समझाया था । ता. १-१-२०१० नये बच्चोंने सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया । प.भ. दशरथभाई चौधरी की तरफ से बच्चों को इनाम दिया गया ।

टोरोन्टो मंदिर बेव साईट www.issocanada.org

- भाईलालभाई पटेल

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से १४ दिसम्बर शुक्रवार रात्रि में ७-३० से १०-३० मेरीलेन्ड के एक होल में सत्संग सभा में चेरीहील से. शा. विश्वप्रकाशदासजीने पधारकर कथावार्ता का लाभ दिया । धून-भजन कीर्तन का समूह कार्यक्रम किया गया । -कनुभाई पटेल

ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से धनुर्मास में दर शनिवार शाम को धून का आयोजन किया जाता था । मकरसंक्रांति को स्वामीने धर्मादा तथा दान के विषय में सुंदर उपदेश दिया । आनंद स्वामी हरिभक्तो को कथावार्ता का सुंदर लाभ दिया था । - रमेशभाई पटेल

हमारे नये (I.S.S.O. चेप्टर) पीयोरीया (अमेरिका) में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से अहमदाबाद में पधारे पूज्य शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा धोलका के महंत मुनि स्वामीने प.पू. आचार्य महाराजश्री का प्रागट्योत्सव विजया दशमी के दिन मंडल की स्थापना की है । शिकागो से १५० माईल दूर श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान हरिभक्त बहुत समय से स्थायी हैं । ५० जितने हरिभक्त मिलकर सत्संग सभा चलाते हैं । - रमेसभाई पटेल

सानेजोशे (I.S.S.O. चेप्टर U.S.A.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से १५-१६ जनवरी को लोस एंजलस मंदिर में शास्त्री धर्मकिशोर स्वामीने शिक्षापत्री जयंती प्रसंग पर शिक्षापत्री का माहात्म्य समझाया था । यह सभा राजेशभाई तथा धमनबहन के घर शाम को रखी गई थी । जिसमें १५० जितने हरिभक्तोंने लाभ लिया था । उसके बाद की कथा मधुभाई तथा चेतनाबहन के वहाँ हुई थी । - प्रशांत धोलकिया

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर : श्री नरनारायणदेव गादी के आचार्य महाराजश्री की पांच-पांच पीढी से सेवा करनेवाले पार्षद श्री महोबतसिंह भगत गुरु पार्षद केसर भगत पौष कृष्णपक्ष ता. २-१-२०१० के शनिवार के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए । पुरानी पीढ़ी के अंतिम सरकारी धरोहर के अक्षरवास से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश में बड़ी कमी महसूश होगी ।

महादेवनगर (मूल लीलापुर ता. लखतर) : प.भ. गणेशभाई रणछोड़भाई पटेल ता. १९-१-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. जयंतीलाल जीवणलाल सोनी (सुंदरीयाणावाले) ता. १-१-२०१० के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

कुहा : श्री रीकीनभाई बीपीनभाई पटेल ता. १७-१-२०१० के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अपने देश विदेश के मंदिर में श्रीहरि के छट्ठे आचार्यश्री सातवें तथा आठवें वंशज के वरद हाथों से तथा अन्तःकरण के आशीर्वाद से भव्य शाकोत्सव सम्पन्न

सिनेमन्शन

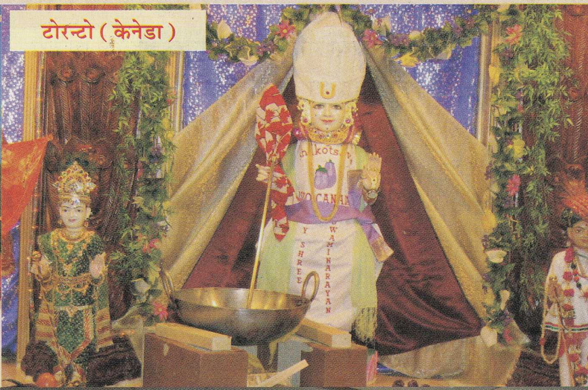
टोरन्टो (केनेडा)

कांकरिया

माणसा

मोटप

जेतपुर (मच्छु)

देलवाडा

घाटलोडीया

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 9-11 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

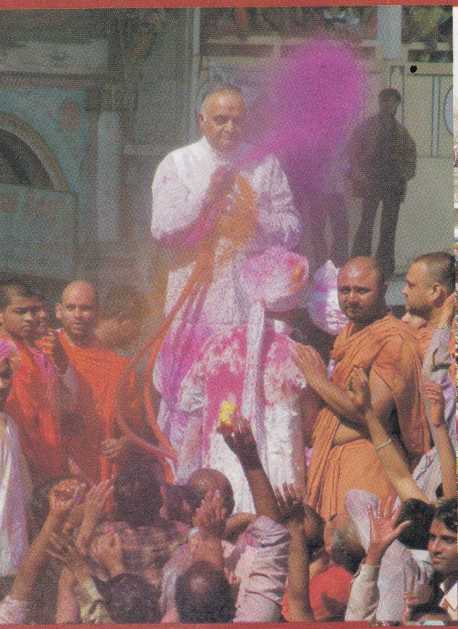

ामिनारायण मंदिर मूली श्री राधाकृष्णदेव के सानिध्य में वसंत पंचमी के अवसर पर बहुत वर्षो के बाद प.पू. झ्र बड़े महाराजश्री रंगोत्सव में पधारे थे । जिसमें बहुत सारे लोगो को रंग गो दिये थे, किसी की आधा शरीर भींगी थी । अन्त में श्रीहरि के दिव्य अलौकिक स्पर्श से जो लोग रंग में रंगाये थे भव सागर से पार हो गये । ऐसा सुख बाहर कहाँ मिलने वाले है ?

घाटलोडीया मंदिर में युवक मंडल द्वारा श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उद्घाटन पर्यन्त प्रतिदिन ११ जनमंगल पाठ के नियम के प्रारंभ में प.पू. बड़े महाराजश्री स्वयं अपने मुख से पाठ किये थे ।

गवाडा गाँव के बालकों द्वारा श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये अपनी बचत में से रकम एकत्रित करके कुंभ स्वरुप में प.पू. बड़े महाराजश्री को अर्पण करते हुये बालक ।

Praful Kharsani